

VAID ICS LUCKNOW



करेंट अफेयर्स मैगज़ीन
यूपीएससी / यूपी पीसीएस
नवंबर, 2024



B-36, SECTOR-C, ALIGANJ, LUCKNOW-226024

क्र सं. टॉपिक	पृष्ठ सं.	क्रम सं. टॉपिक	पृष्ठ सं.
1. कोदो बाजरा के पौधे	1	प्रारंभिक परीक्षा के लिए तथ्य	
2. खाद्य एवं कृषि की स्थिति 2024	1	1. लिग्नोसैट	30
3. हाइपरसोनिक मिसाइलों का परीक्षण	2	2. बुकर पुरस्कार 2024	30
4. विकिरण बल" (RF)	4	3. फ्लू गैस डिसल्फराइजेशन (FGD)	31
5. जीवाश्म ईंधन अप्रसार संधि (FFPT)	6	4. नरसापुर लेस क्राफ्ट	31
6. नेशनल एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड	7	5. नागरी दुबराज चावल	32
7. उच्च प्रदर्शन वाली इमारतें (एचपीबी)	8	6. रातापानी वन	32
8. आर्मी टैक्टिकल मिसाइल सिस्टम	10	7. एक्स्ट्राक्रोमोसोमल डीएनए (ईसीडीएनए)	32
9. जी20 शिखर सम्मेलन 2024	11	8. सुरक्षित ओवरनाइट रुपया दर	33
10. भारत में न्यायिक सुधार	12	9. ओवरनाइट अल्टरनेटिव रेफरेंस रेट	33
11. वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन (ONOS)	13	10. अंतर्राष्ट्रीय सूखा प्रतिरोध गठबंधन	34
12. पैन 2.0 परियोजना	14		
13. बेसिक स्टैटिस्टिकल रिटर्न (BSR)	15		
14. वैश्विक सहकारी सम्मेलन 2024	16		
15. ई-दाखिल पोर्टल का राष्ट्रव्यापी कार्यान्वयन	17		
16. जंगली/झाड़ी आग प्रदूषण पर अध्ययन	18		
17. समुद्री कार्बन डाइऑक्साइड निष्कासन	19		
18. विंडफॉल गेन्स टैक्स	21		
19. भारत में तटीय कटाव: एक बढ़ता संकट	22		
20. सुगम्य भारत अभियान: उपलब्धियाँ	23		
21. विश्व वन्यजीव संरक्षण दिवस	24		
22. झील-प्रभाव वाली बर्फ	25		
23. फ्रेंडशोरिंग और रीशोरिंग	26		
24. विदेशी मुद्रा अनिवासी (बैंकिंग)	27		
25. विश्व सूखा एटलस 2024	28		

कोदो बाजरा के पौधे/सीपीए (साइक्लोपियाज़ोनिक एसिड)

Why in News? बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में मरने वाले 10 हाथियों की विष विज्ञान रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने कोदो बाजरा के पौधों की "बड़ी मात्रा" खा ली थी जो एक फंगस से संक्रमित थे।

- सभी एकत्रित नमूनों में साइक्लोपियाज़ोनिक एसिड की मौजूदगी पाई गई। नमूने में पाए गए साइक्लोपियाज़ोनिक एसिड की अनुमानित सांद्रता 100 पीपीबी से अधिक थी। सटीक सांद्रता का अनुमान लगाने के लिए सभी नमूनों की आगे की जांच की जा रही है...
- परिणामों से संकेत मिलता है कि हाथियों ने बड़ी मात्रा में कोदो पौधे/अनाज खाए होंगे।

रिपोर्ट का मुख्य निष्कर्ष:

- जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड टेक्निकल रिसर्च में प्रकाशित 'कोडुआ विषाक्तता में साइक्लोपियाज़ोनिक एसिड विषाक्तता का संभावित जोखिम' शीर्षक वाले 2023 के शोध पत्र के अनुसार, कोदो बाजरा मुख्य रूप से शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में उगाया जाता है।
- लेकिन कभी-कभी, "वसंत और गर्मियों जैसी पर्यावरणीय परिस्थितियाँ एक निश्चित प्रकार के ज़हर के लिए उपयुक्त होती हैं, जिससे फसल का आर्थिक नुकसान अधिक होता है"
- सीपीए (साइक्लोपियाज़ोनिक एसिड) कोदो बाजरा के बीजों से जुड़े प्रमुख माइकोटॉक्सिन में से एक है, जो कोदो विषाक्तता का कारण बनता है, जिसे पहली बार अस्सी के दशक के मध्य में पहचाना गया था।"
- बाजरा फंगल संक्रमण के लिए अधिक प्रवण होता है, उसके बाद बैक्टीरिया और वायरल संक्रमण होते हैं; ये संक्रमण अनाज और चारे की उपज पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।
- एर्गोट एक परजीवी फंगल एंडोफाइट है जो विभिन्न ब्लेड घास के कान के सिर में बढ़ता है, सबसे अधिक बार कोदो बाजरा पर। ऐसे कोदो अनाज का सेवन अक्सर विषाक्तता का कारण बनता है।

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के बारे में:

- यह भारत के मध्य प्रदेश के उमरिया जिले में स्थित है, यह भारत के सबसे प्रसिद्ध बाघ अभयारण्यों और राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है, जो बंगाल के बाघों के उच्च घनत्व के लिए जाना जाता है।
- 1968 में एक राष्ट्रीय उद्यान के रूप में स्थापित और बाद में प्रोजेक्ट टाइगर के तहत 1993 में बाघ अभयारण्य घोषित किया गया, बांधवगढ़ अपने सफल बाघ संरक्षण प्रयासों और विविध वनस्पतियों और जीवों के लिए प्रसिद्ध है।

खाद्य एवं कृषि की स्थिति 2024 (SOFA 2024)

खबरों में क्यों? खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) ने हाल ही में 'खाद्य एवं कृषि की स्थिति 2024' (SOFA 2024) जारी की है।

मुख्य निष्कर्ष:

- वास्तविक लागत लेखांकन: रिपोर्ट में कृषि खाद्य प्रणालियों में वास्तविक लागत लेखांकन के महत्व पर जोर दिया गया है।
- यह पर्यावरणीय गिरावट, स्वास्थ्य प्रभाव और सामाजिक असमानताओं सहित खाद्य उत्पादन और उपभोग से जुड़ी छिपी हुई लागतों और लाभों को उजागर करने में मदद करता है।
- कृषि खाद्य प्रणालियों की छिपी हुई लागतें सालाना लगभग 12 ट्रिलियन डॉलर थीं।
- वैश्विक स्तर पर, प्रमुख मात्राबद्ध छिपी हुई लागतें अस्वास्थ्यकर आहार पैटर्न से उत्पन्न होती हैं जो बीमारियों और कम श्रम उत्पादकता का कारण बनती हैं।

- भारत की छिपी हुई लागतें वैश्विक स्तर पर तीसरी सबसे बड़ी हैं, चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद, जिनकी छिपी हुई लागतें क्रमशः **\$1.8 ट्रिलियन और \$1.4 ट्रिलियन** हैं।
- स्वास्थ्य संबंधी छिपी हुई लागतें, जिनमें आहार संबंधी बीमारियों के कारण उत्पादकता में होने वाली हानियाँ शामिल हैं, कुल लागत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।
- ये लागतें सालाना लगभग 846 बिलियन डॉलर होने का अनुमान है, जो बीमारी के बोझ और कम श्रम उत्पादकता को दर्शाती हैं।
- आहार संबंधी जोखिम और गैर-संचारी रोग: अस्वास्थ्यकर आहार वैश्विक छिपी हुई लागतों में एक प्रमुख योगदानकर्ता हैं, जो इन लागतों का लगभग 70% (\$8.1 ट्रिलियन) है।
- रिपोर्ट आहार संबंधी जोखिमों और गैर-संचारी रोगों के बीच संबंध को रेखांकित करती है, जो स्वस्थ खाद्य वातावरण की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है।
- आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव: कृषि खाद्य प्रणालियाँ समाज के लिए महत्वपूर्ण लाभ उत्पन्न करती हैं, लेकिन इनका नकारात्मक प्रभाव भी बहुत अधिक होता है।
- रिपोर्ट इन छिपी हुई लागतों की पहचान करती है, जिसमें बाजार और नीतिगत विफलताओं से होने वाले आर्थिक नुकसान शामिल हैं, और नीतिगत निर्णयों को सूचित करने के लिए व्यापक आकलन की आवश्यकता पर जोर देती है।
- यह अधिक उपभोक्ता जागरूकता और सहभागिता के साथ-साथ आपूर्ति श्रृंखला में उत्पादकों के लिए समान भूमिका का आह्वान करती है।

मुख्य सिफारिशें:

- स्वास्थ्यवर्धक आहार को बढ़ावा देना:
- टिकाऊ कृषि पद्धतियाँ:
- सामाजिक समानता में सुधार:
- इनमें टिकाऊ पद्धतियों को प्रोत्साहित करना, संस्थागत और वित्तीय क्षमताओं में सुधार करना और परिवर्तन प्रक्रिया में हितधारकों को शामिल करना शामिल है।

भारत ने किया हाइपरसोनिक मिसाइलों का परीक्षण

चर्चा में क्यों? भारत के रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) ने लंबी दूरी की हाइपरसोनिक मिसाइल का पहला उड़ान परीक्षण सफलतापूर्वक किया। मिसाइल को ओडिशा के तट से दूर डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप से लॉन्च किया गया।

मुख्य विशेषताएं:

गति: मैक 5 (6,174 किमी/घंटा) से अधिक गति से यात्रा करने में सक्षम

सीमा: 1,500 किमी से अधिक

लक्ष्य क्षमता: गतिमान समुद्री लक्ष्यों और स्थिर भूमि लक्ष्यों दोनों को मार सकता है।

हाइपरसोनिक तकनीक वाले देश:

- हाइपरसोनिक मिसाइलों के विकास में **रूस और चीन** आगे हैं।
- संयुक्त राज्य अमेरिका हाइपरसोनिक मिसाइल प्रणालियों पर सक्रिय रूप से काम कर रहा है।
- **फ्रांस, जर्मनी, जापान, ऑस्ट्रेलिया, ईरान और इज़राइल** जैसे अन्य देश भी हाइपरसोनिक मिसाइल परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं।

हाइपरसोनिक मिसाइलें क्या हैं?

हाइपरसोनिक मिसाइलें उन्नत हथियार हैं जो मैक 5 (ध्वनि की गति से पाँच गुना, लगभग **6,200 किमी/घंटा** या **3,850** मील प्रति घंटे) से अधिक गति से यात्रा करते हैं और उड़ान के दौरान पैतरेबाज़ी करने में सक्षम हैं। ये विशेषताएँ उन्हें पारंपरिक बैलिस्टिक या क्रूज मिसाइलों की तुलना में काफी तेज़ और अधिक चुस्त बनाती हैं।

हाइपरसोनिक मिसाइलों के प्रकार:**हाइपरसोनिक ग्लाइड वाहन (HGV):**

- रॉकेट के ऊपर से लॉन्च किया जाता है और उच्च ऊँचाई पर छोड़ा जाता है।
- हाइपरसोनिक गति से वायुमंडल में ग्लाइड करते हैं, मिसाइल रक्षा प्रणालियों से बचने के लिए अप्रत्याशित रूप से पैतरेबाज़ी करते हैं।

उदाहरण: चीन का DF-ZF, यू.एस. उन्नत हाइपरसोनिक हथियार।

हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइलें (HCM):

- अपनी उड़ान के दौरान स्क्रेमजेट जैसे उन्नत एयर-ब्रीदिंग इंजन द्वारा संचालित।
- निरंतर हाइपरसोनिक गति बनाए रखते हुए पृथ्वी के वायुमंडल में यात्रा करते हैं।
- **उदाहरण:** रूस की जिरकोन, भारत की ब्रह्मोस-II (विकासधीन)।

**हाइपरसोनिक मिसाइलों की मुख्य विशेषताएँ:****अत्यधिक गति:**

- **मैक 5** से भी अधिक तेज़ गति से यात्रा करना, जिससे लक्ष्य को प्रतिक्रिया करने या बचाव करने में लगने वाला समय कम हो जाता है।
- मिसाइल हज़ारों किलोमीटर दूर स्थित लक्ष्य पर मिनटों में हमला कर सकती है।

पैंतरेबाज़ी:

- बैलिस्टिक मिसाइलों के विपरीत जो एक पूर्वानुमानित चाप का अनुसरण करती हैं, हाइपरसोनिक मिसाइलें उड़ान के बीच में ही अपना प्रक्षेप पथ बदल सकती हैं, जिससे उन्हें पहचानना और रोकना मुश्किल हो जाता है।

कम ऊँचाई:

- पारंपरिक अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइलों (ICBM) की तुलना में ज़मीन के ज़्यादा करीब उड़ती हैं, जिससे वे **रडार सिस्टम** को कम दिखाई देती हैं।

दोहरे उपयोग की क्षमता:

- **पारंपरिक या परमाणु वारहेड** से लैस हो सकती हैं, जिससे रणनीतिक अस्पष्टता बढ़ जाती है।

हाइपरसोनिक मिसाइलों के लाभ:**रक्षा प्रणालियों से बचना:**

- उनकी गति और चपलता उन्हें वर्तमान मिसाइल रक्षा तकनीक का उपयोग करके रोकना लगभग असंभव बना देती है।

सटीक लक्ष्यीकरण:

- सटीक सटीकता के लिए डिज़ाइन किया गया, सैन्य ठिकानों, जहाजों या महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे जैसे उच्च-मूल्य वाले लक्ष्यों को नष्ट करने के लिए उपयोगी।

रणनीतिक प्रथम-हमला क्षमता:

- राष्ट्रों को जल्दी और निर्णायक रूप से हमला करने की अनुमति देता है, संभावित रूप से जवाबी कार्रवाई से पहले विरोधी रक्षा को बेअसर कर देता है।

CO2 ने वैश्विक तापमान में सबसे ज़्यादा वृद्धि क्यों की है?/ विकिरण बल" (RF) क्या है?

चर्चा में क्यों? अध्ययनों से पता चला है कि CO2 ने जलवायु परिवर्तन में किसी भी अन्य कारक से ज़्यादा योगदान दिया है। चेक गणराज्य स्थित स्वतंत्र थिंक टैंक फैक्ट्स ऑन क्लाइमेट चेंज के विश्लेषण के अनुसार, वास्तव में, **CO2 वैश्विक तापमान में लगभग 70%** वृद्धि के लिए ज़िम्मेदार है।

- 2013 में, जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) - संयुक्त राष्ट्र निकाय जो जलवायु परिवर्तन के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान को आगे बढ़ाता है - ने तीन अलग-अलग जलवायु कारकों के "**विकिरण बल**" (RF) या ताप प्रभाव की तुलना की: GHG, एरोसोल और भूमि उपयोग परिवर्तन। यह पाया गया कि **1750 और 2011 के बीच, CO2** में सबसे ज़्यादा **सकारात्मक RF** था, जिसका अर्थ है कि इसका ग्रह पर सबसे ज़्यादा ताप प्रभाव था।
- विश्लेषण से यह भी पता चला कि अन्य GHG जैसे **CH4 या हाइड्रोफ्लोरोकार्बन** (पूरी तरह से मानव निर्मित GHG) जो बहुत अधिक शक्तिशाली हैं - जबकि **CH4 CO2 से लगभग 80** गुना अधिक शक्तिशाली है, HFC हजारों गुना अधिक शक्तिशाली हो सकते हैं - CO2 की तुलना में कम तापीय प्रभाव डालते हैं।

इसके दो कारण हैं।

- **एक, CO2, CH4 और HFC की तुलना में वायुमंडल में बहुत अधिक प्रचुर मात्रा में है।** 18वीं शताब्दी में औद्योगिक काल की शुरुआत के बाद से, मानवीय गतिविधियों ने वायुमंडलीय CO2 को **50%** बढ़ा दिया है, जिसका अर्थ है कि CO2 की मात्रा अब **1750 में इसके मूल्य का 150%** है, नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (NASA) की एक रिपोर्ट के अनुसार।

- दूसरा, CO₂ मानवीय गतिविधियों के कारण उत्सर्जित अन्य प्रमुख GHG की तुलना में वायुमंडल में अधिक समय तक रहती है। CH₄ उत्सर्जन को वायुमंडल से बाहर निकलने में लगभग एक दशक लगता है (यह CO₂ में परिवर्तित हो जाता है) और नाइट्रस ऑक्साइड (N₂O) को लगभग एक सदी लगती है।
- "वायुमंडल में CO₂ के उत्सर्जन के बाद, **40% 100 वर्षों तक वायुमंडल में रहेगा और 20% 1000 वर्षों तक रहेगा**, जबकि अंतिम **10% को समाप्त होने में 10,000 वर्ष लगेगे**," अमेरिका स्थित गैर-लाभकारी संगठन यूनिजन ऑफ कंसर्नड साइंटिस्ट्स (UCS) की एक रिपोर्ट में कहा गया है।
- उल्लेखनीय रूप से, जल वाष्प वायुमंडल में सबसे प्रचुर मात्रा में पाया जाने वाला ग्रीनहाउस गैस है। हालाँकि, इसका चक्र छोटा होता है (**औसतन 10 दिन**) और यह वायुमंडल में **CO₂** की तरह नहीं बनता है। इसलिए, CO₂ की तुलना में जल वाष्प का तापन प्रभाव बहुत अधिक **नहीं** होता है। लेकिन जैसे-जैसे वैश्विक तापमान बढ़ता जा रहा है, वायुमंडल में अधिक पानी वाष्पित होता जा रहा है, जिससे अधिक गर्मी पैदा हो रही है।

रेडिएटिव फोर्सिंग (RF) क्या है?

रेडिएटिव फोर्सिंग (RF) ग्रीनहाउस गैसों, एरोसोल या सौर विकिरण परिवर्तनों जैसे कारकों के कारण सूर्य से आने वाली ऊर्जा और पृथ्वी से बाहर जाने वाली ऊर्जा के बीच संतुलन में परिवर्तन को संदर्भित करता है।

यह कैसे काम करता है?

- आने वाली सौर ऊर्जा: सूर्य ऊर्जा उत्सर्जित करता है जो पृथ्वी तक पहुँचती है। इस ऊर्जा का कुछ हिस्सा बादलों, एरोसोल और पृथ्वी की सतह द्वारा अंतरिक्ष में वापस परावर्तित होता है।
- **बाहर जाने वाली अवरक्त ऊर्जा:** पृथ्वी सौर ऊर्जा को अवशोषित करने के बाद अवरक्त विकिरण के रूप में अंतरिक्ष में वापस ऊर्जा उत्सर्जित करती है।

असंतुलन: रेडिएटिव फोर्सिंग इस संतुलन को बदलने वाले कारकों के कारण होने वाले परिवर्तन को मापता है।

उदाहरण के लिए:

सकारात्मक RF ग्रह को गर्म करता है (उदाहरण के लिए, CO₂ या मीथेन से अधिक गर्मी फँस जाती है)।

नकारात्मक RF ग्रह को ठंडा करता है (उदाहरण के लिए, एरोसोल से सूर्य के प्रकाश को दूर परावर्तित करने से)।

विकिरण बल के प्रकार:

ग्रीनहाउस गैसों: कार्बन डाइऑक्साइड (CO₂), मीथेन (CH₄), और नाइट्रस ऑक्साइड (N₂O) सकारात्मक विकिरण बल में प्रमुख योगदानकर्ता हैं, क्योंकि वे वायुमंडल में गर्मी को रोकते हैं।

उदाहरण: जीवाश्म ईंधन को जलाने से CO₂ में वृद्धि से शुद्ध वार्मिंग प्रभाव होता है।

एरोसोल: सल्फेट एरोसोल जैसे छोटे कण सूर्य के प्रकाश को परावर्तित कर सकते हैं, जिससे नकारात्मक RF और शीतलन प्रभाव हो सकता है। उदाहरण: ज्वालामुखी विस्फोट से एरोसोल निकलते हैं, जिससे ग्रह अस्थायी रूप से ठंडा हो जाता है।

सौर विकिरण: सूर्य के ऊर्जा उत्पादन में भिन्नता RF का कारण बन सकती है, हालाँकि ग्रीनहाउस गैसों की तुलना में हाल ही में हुई गर्मी में इसका योगदान बहुत कम है। भूमि उपयोग में परिवर्तन: वनों की कटाई या शहरीकरण पृथ्वी के एल्बेडो (परावर्तन) को बदल देता है, जिससे सूर्य के प्रकाश को अवशोषित या परावर्तित करने की मात्रा में परिवर्तन करके RF में योगदान होता है।

जीवाश्म ईंधन अप्रसार संधि (FFPT)

चर्चा में क्यों? सरकारों और नागरिक समाज संगठनों का एक समूह मानता है कि जीवाश्म ईंधन को परमाणु हथियारों की तरह ही विनियमित किया जाना चाहिए, और वे जीवाश्म ईंधन अप्रसार संधि (FF-NPT) के विचार को आगे बढ़ा रहे हैं।

जीवाश्म ईंधन अप्रसार संधि (FFPT) क्या है?

जीवाश्म ईंधन अप्रसार संधि (FFPT) एक अंतरराष्ट्रीय पहल है जिसका उद्देश्य जीवाश्म ईंधन - कोयला, तेल और गैस - पर वैश्विक निर्भरता को संबोधित करना है, उनके उत्पादन और उपयोग को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना है। यह परमाणु अप्रसार संधि जैसी सफल वैश्विक संधियों से प्रेरणा लेता है और जीवाश्म ईंधन उद्योग पर ध्यान केंद्रित करके जलवायु परिवर्तन के मूल कारण से निपटने का प्रयास करता है।

- FF-NPT जीवाश्म ईंधन निष्कर्षण को समाप्त करने, मौजूदा उत्पादन को बंद करने और नवीकरणीय ऊर्जा के लिए एक उचित संक्रमण का प्रबंधन करने के लिए देशों पर कानूनी रूप से बाध्यकारी बनाने का प्रस्ताव करता है।

यह तीन स्तंभों पर काम करता है -

अप्रसार, जो कोयला, तेल और गैस उत्पादन के विस्तार को समाप्त करने के लिए एक वैश्विक सहयोग मॉडल है;

एक निष्पक्ष चरण-आउट, जिसमें मौजूदा जीवाश्म ईंधन उत्पादन को इस तरह से बंद करने की एक न्यायसंगत योजना शामिल है कि उत्सर्जन के लिए क्षमता और ऐतिहासिक जिम्मेदारी वाले राष्ट्र सबसे तेज़ी से संक्रमण करें और दूसरों को सशक्त बनाएँ;

'न्यायसंगत संक्रमण', जो नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाने और जीवाश्म ईंधन से दूर आर्थिक विविधीकरण को तेज़ करने का आह्वान करता है ताकि कोई भी श्रमिक, समुदाय या देश पीछे न छूट जाए।

2016 में इसकी अवधारणा और 2019 में आधिकारिक तौर पर लॉन्च होने के बाद से, **FF-NPT वित्त की दीवार** से टकरा गया है।

FFPT के मुख्य उद्देश्य

जीवाश्म ईंधन के विस्तार को रोकना:

- नई जीवाश्म ईंधन परियोजनाओं के विकास को रोकना।
- कोयला, तेल और गैस उत्पादन के लिए अन्वेषण और सब्सिडी को समाप्त करना।

मौजूदा उत्पादन को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना:

- मौजूदा जीवाश्म ईंधन उत्पादन को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने के लिए एक निष्पक्ष और न्यायसंगत संक्रमण योजना लागू करना, यह सुनिश्चित करना कि यह पेरिस समझौते के तहत 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य के अनुरूप हो।

स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण को बढ़ावा देना:

- नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों और प्रौद्योगिकियों में निवेश का समर्थन करना।
- समानता पर ध्यान केंद्रित करना, यह सुनिश्चित करना कि विकासशील देशों के पास ऊर्जा संक्रमण के लिए संसाधनों तक पहुँच हो।

FFPT क्यों महत्वपूर्ण है?

बढ़ते उत्सर्जन:

- जीवाश्म ईंधन वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के 75% से अधिक के लिए जिम्मेदार हैं और जलवायु परिवर्तन में सबसे बड़े योगदानकर्ता हैं।

अपर्याप्त वैश्विक कार्रवाई:

- पेरिस समझौते जैसे मौजूदा जलवायु समझौते उत्सर्जन को कम करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं लेकिन जीवाश्म ईंधन उत्पादन को स्पष्ट रूप से संबोधित नहीं करते हैं।

प्रभाव में असमानताएँ:

- जीवाश्म ईंधन पर निर्भर अर्थव्यवस्थाएँ और कमजोर समुदाय जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का खामियाजा भुगतते हैं, जिसके लिए संक्रमण के लिए निष्पक्ष दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

भारत का दृष्टिकोण:**जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता:**

- भारत ग्रीनहाउस गैसों का तीसरा सबसे बड़ा उत्सर्जक है, जिसमें कोयला एक प्रमुख ऊर्जा स्रोत है।
- ग्लोबल कार्बन प्रोजेक्ट की रिपोर्ट का अनुमान है कि भारत के जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन में 2024 में 4.6 प्रतिशत की वृद्धि होने वाली है।

ऊर्जा सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:

- नवीकरणीय ऊर्जा के विस्तार के लिए प्रतिबद्ध होने के बावजूद, भारत को अपनी बढ़ी आबादी के लिए ऊर्जा की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए चरणबद्ध दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

FFPT में भूमिका:

- भारत संधि के तहत वित्तीय और तकनीकी सहायता की वकालत कर सकता है, जिससे इसकी अर्थव्यवस्था के लिए एक न्यायोचित परिवर्तन सुनिश्चित हो सके।

नेशनल एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड (NARCL)

खबरों में क्यों? वित्त मंत्री ने हाल ही में ऋणदाताओं से आग्रह किया है कि वे ग्राहकों पर अनावश्यक बीमा उत्पादों का बोझ न डालें और जमाराशि जुटाने तथा ऋण देने पर ध्यान केंद्रित करें; बैंकों से NARCL के माध्यम से संकटग्रस्त परिसंपत्तियों के समाधान के लिए 'अधिक मुखर' होने का आग्रह भी किया गया।

नेशनल एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड (NARCL) के बारे में:

- नेशनल एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड (NARCL), जिसे अक्सर "बैड बैंक" के रूप में जाना जाता है, भारत सरकार द्वारा बैंकिंग प्रणाली में गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (NPA) के मुद्दे को हल करने में मदद करने के लिए स्थापित एक इकाई है।
- यह वाणिज्यिक बैंकों से बड़े मूल्य के खराब ऋणों को खरीदने और प्रबंधित करने पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि उनकी बैलेंस शीट को साफ किया जा सके और अर्थव्यवस्था के उत्पादक क्षेत्रों को ऋण देने की उनकी क्षमता में सुधार हो सके।

NARCL क्यों बनाया गया?

- **बढ़ते एनपीए:** भारतीय बैंक, विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, एनपीए के उच्च स्तर से बोझिल हैं। यह उनकी ऋण देने की क्षमता को सीमित करता है और उनकी वित्तीय स्थिरता को प्रभावित करता है।
- **रुका हुआ ऋण चक्र:** खराब ऋणों में फंसे बैंक व्यवसायों को प्रभावी ढंग से ऋण नहीं दे सकते, जिससे आर्थिक विकास प्रभावित होता है।
- **केंद्रीकृत समाधान की आवश्यकता:** खराब ऋणों को अपने दम पर संभालने वाले व्यक्तिगत बैंक अक्षम थे। इन ऋणों को केंद्रीय और व्यवस्थित रूप से प्रबंधित करने के लिए NARCL जैसी एक विशेष संस्था बनाई गई थी।

NARCL की मुख्य विशेषताएँ:**स्वामित्व:**

- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (PSB) के पास बहुसंख्यक स्वामित्व।
- यह इंडिया डेट रेज़ोल्यूशन कंपनी लिमिटेड (IDRCL) के सहयोग से काम करता है, जिसे खराब ऋणों के प्रबंधन और समाधान का काम सौंपा गया है।

फ़ोकस:

- इसका उद्देश्य बैंकों से बड़े मूल्य के NPA (₹500 करोड़ और उससे अधिक) को अपने नियंत्रण में लेना है।

सरकारी सहायता:

- सरकार NARCL द्वारा जारी किए गए सुरक्षा रसीदों को वापस करने के लिए ₹30,600 करोड़ की गारंटी प्रदान करती है, जिससे बैंकों के लिए जोखिम कम हो जाता है।

ऑपरेशनल मॉडल:

- NARCL बैंकों से रियायती दर पर NPA खरीदता है, खरीदे गए ऋणों के लिए बैंकों को सुरक्षा रसीदें जारी करता है, और ऋणों की वसूली या समाधान के लिए IDRCL के साथ सहयोग करता है।

अधिग्रहण रणनीति

- **नकद में 15%:** NARCL बैंक को नकद में खराब ऋण के सहमत मूल्य का 15% अग्रिम भुगतान करता है।
- **85% सुरक्षा रसीदों (SRs) में:** भुगतान का शेष 85% सुरक्षा रसीदों (SRs) के रूप में किया जाता है, जो ऋण के मूल्य का प्रतिनिधित्व करने वाले वित्तीय साधन हैं।
- NARCL द्वारा जारी किए गए SRs ₹30,600 करोड़ की सरकारी गारंटी द्वारा समर्थित हैं।
- यह गारंटी पाँच वर्षों के लिए वैध है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वसूली में कमी के मामले में बैंकों को भुगतान प्राप्त हो।
- NARCL मुख्य रूप से अपने प्रभाव को अधिकतम करने के लिए **₹500 करोड़ या उससे अधिक** मूल्य के ऋणों को लक्षित करता है।
- खराब ऋण का **मूल्यांकन ऋण** की मूल या बकाया राशि के बजाय उसके अपेक्षित वसूली मूल्य पर आधारित होता है।
- यह सुनिश्चित करता है कि मूल्य निर्धारण वसूली की यथार्थवादी संभावनाओं को दर्शाता है।

उच्च प्रदर्शन वाली इमारतें (एचपीबी)/डिजाइन कैसे किसी इमारत को जलवायु के प्रति अधिक लचीला बनाने में मदद कर सकता है?

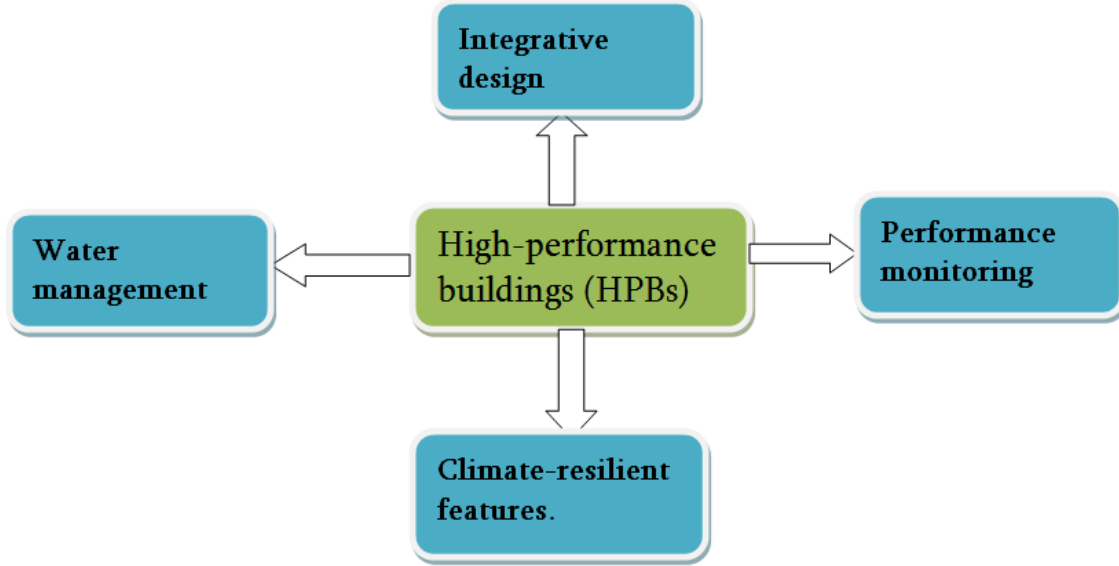
चर्चा में क्यों? उच्च प्रदर्शन वाली इमारतें टिकाऊ निर्माण में सबसे आगे हैं, जो एकीकृत डिजाइन और टिकाऊ सामग्रियों के उपयोग के माध्यम से ऊर्जा दक्षता, संसाधन संरक्षण और जलवायु लचीलापन पर ध्यान केंद्रित करती हैं; वे पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए निष्क्रिय और सक्रिय रणनीतियों को अपनाती हैं

उच्च प्रदर्शन वाली इमारतें (एचपीबी) क्या हैं?

- उच्च प्रदर्शन वाली इमारतें (एचपीबी) ऐसी संरचनाएं हैं जिन्हें ऊर्जा दक्षता, स्थिरता, आराम और परिचालन प्रदर्शन के बेहतर स्तर प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **उच्च प्रदर्शन वाली इमारतें (एचपीबी)** टिकाऊ निर्माण में सबसे आगे हैं, जो ऊर्जा दक्षता, जलवायु लचीलापन और संसाधन संरक्षण जैसी तत्काल आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। **जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन तीव्र होता है**, संसाधन कम होते

जाते हैं और शहरीकरण बढ़ता है, एचपीबी - कम ऊर्जा की खपत करने, संसाधनों को संरक्षित करने और अप्रत्याशित मौसम का सामना करने के लिए बनाए गए - टिकाऊ जीवन को प्राप्त करने और बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

• HPB के निर्माण के लिए **एकीकृत डिजाइन, जीवनचक्र-आधारित सामग्री, कुशल ऊर्जा** और जल प्रबंधन, प्रदर्शन निगरानी और जलवायु-लचीली विशेषताओं जैसी प्रमुख प्रथाओं की आवश्यकता होती है।



एकीकृत डिजाइन क्या है?

- HPB के मूल में एक एकीकृत डिजाइन दृष्टिकोण है जो वास्तुकारों, इंजीनियरों, स्थिरता सलाहकारों और भवन मालिकों को एक साथ काम करने और मापने योग्य प्रदर्शन लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- ये लक्ष्य, उदाहरण के लिए, कब्जे वाले स्थानों में **90% दिन के उजाले या वाणिज्यिक भवनों में प्रति टन एयर-कंडीशनिंग** के लिए **700 वर्ग फीट** में शीतलन का लक्ष्य रख सकते हैं। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि सभी बिल्टिंग सिस्टम - एयर-कंडीशनिंग, लाइटिंग और बिल्टिंग लिफ्टों के घटक जैसे दीवारें, छत और खिड़कियाँ - एक साथ सुचारू रूप से काम करें।
- डिजिटल मॉडलिंग भी परियोजना का एक आभासी प्रतिनिधित्व बनाकर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे टीम को प्रदर्शन परिणामों की भविष्यवाणी करने, इष्टतम सिस्टम आकार निर्धारण का मार्गदर्शन करने और विभिन्न रणनीतियों का परीक्षण करने की अनुमति मिलती है। सिमुलेशन के साथ, टीम निर्माण शुरू होने से पहले ऊर्जा-बचत और थर्मल आराम लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अपनी रणनीतियों को समायोजित कर सकती है। यह पूर्वानुमानित दृष्टिकोण उच्च परिचालन दक्षता प्राप्त करने, लचीलेपन में सुधार करने और दीर्घकालिक लागतों को कम करने में मदद करता है।
- **एचपीबी में एकीकृत डिजाइन प्रक्रिया** का एक उदाहरण निष्क्रिय डिजाइन रणनीतियों का प्रारंभिक उपयोग है, जिसके तहत डिजाइनर प्राकृतिक सूर्य के प्रकाश का अधिकतम उपयोग करते हैं और ऐसी सामग्रियों का उपयोग करने की योजना बनाते हैं जो गर्मी (**थर्मल द्रव्यमान**) को बनाए रखती हैं। ये रणनीतियाँ हीटिंग और कूलिंग की माँग को कम करती हैं, जिससे डिजाइनर सही आकार के उपकरण चुन सकते हैं।

आर्मी टैक्टिकल मिसाइल सिस्टम (ATACMS)

चर्चा में क्यों? अमेरिका ने हाल ही में कीव को रूस के अंदर आर्मी टैक्टिकल मिसाइल सिस्टम, जिसे ATACMS के नाम से भी जाना जाता है, का उपयोग करने की अनुमति दी है।

ATACMS क्या है?

- आर्मी टैक्टिकल मिसाइल सिस्टम (ATACMS) संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा विकसित एक सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल है।
- इसे उच्च-मूल्य, समय-संवेदनशील लक्ष्यों, जैसे कि दुश्मन के कमांड सेंटर, वायु रक्षा प्रणाली, रसद केंद्र और सैनिकों के जमावड़े के खिलाफ लंबी दूरी की सटीक हमले करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। लॉकहीड मार्टिन द्वारा निर्मित, ATACMS मिसाइलों को M270 मल्टीपल लॉन्च रॉकेट सिस्टम (MLRS) और M142 हाई मोबिलिटी आर्टिलरी रॉकेट सिस्टम (HIMARS) जैसे मोबाइल लॉन्चर से दागा जाता है।

ATACMS की मुख्य विशेषताएं:

- संस्करण के आधार पर, ATACMS की सीमा 300 किलोमीटर (186 मील) तक है, जो दुश्मन की रेखाओं से बहुत दूर तक हमला करने में सक्षम है।
- एकात्मक वारहेड (सटीक हमलों के लिए) या क्लस्टर युद्ध सामग्री (एक विस्तृत क्षेत्र में उप-युद्ध सामग्री को फैलाने वाले) से सुसज्जित।

मार्गदर्शन प्रणाली:

- सटीक लक्ष्यीकरण के लिए जड़त्वीय नेविगेशन और GPS के संयोजन का उपयोग करता है।
- सभी मौसम की स्थितियों में और विभिन्न लक्ष्यों के विरुद्ध उपयोग किया जा सकता है।
- यूएस. द्वारा आपूर्ति की गई HIMARS और MLRS प्रणालियों के साथ संगत, NATO सहयोगियों और भागीदारों द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

स्टॉर्म शैडो (SCALP EG) क्या है?

- स्टॉर्म शैडो एक लंबी दूरी की हवाई लॉन्च की गई क्रूज मिसाइल है जिसे यूरोपीय रक्षा ठेकेदार MBDA द्वारा विकसित किया गया है। इसे बंकरों, वायु रक्षा प्रणालियों, कमांड सेंटरों और बुनियादी ढांचे जैसे उच्च-मूल्य, अच्छी तरह से संरक्षित लक्ष्यों के विरुद्ध सटीक हमलों के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- मिसाइल का उपयोग मुख्य रूप से यूनाइटेड किंगडम की रॉयल एयर फ़ोर्स (RAF), फ्रेंच एयर फ़ोर्स और अन्य NATO सहयोगियों द्वारा किया जाता है।
- स्टॉर्म शैडो को फ्रांस में SCALP EG (सिस्टम डे क्रोइसिएर ऑटोनोम ए लॉन्ग पोर्टे - एम्प्लोई जनरल) के नाम से भी जाना जाता है, जो फ्रांसीसी सेना में इसका पदनाम है।

स्टॉर्म शैडो (SCALP EG) की मुख्य विशेषताएं:

- स्टॉर्म शैडो की रेंज 250-300 किलोमीटर (155-186 मील) है, जो इसे दुश्मन के इलाके में गहरे लक्ष्यों पर हमला करने की अनुमति देती है, जबकि लॉन्च प्लेटफॉर्म को दुश्मन की हवाई सुरक्षा की पहुंच से बाहर रखती है।
- यह जड़त्वीय नेविगेशन, GPS और **टेरेन रेफरेंस नेविगेशन सिस्टम (TERCOM)** के संयोजन से लैस है, जो इसे प्रतिकूल मौसम की स्थिति या GPS-जामिंग वातावरण में भी सटीक उड़ान पथों का अनुसरण करने में सक्षम बनाता है।
- मिसाइल में **200-किलोग्राम (440 पाउंड)** का ब्रोच वारहेड होता है, जो बंकरों, कमांड और कंट्रोल सुविधाओं और बुनियादी ढांचे सहित कठोर लक्ष्यों को भेदने में सक्षम है।

- **स्टॉर्म शैडो को टॉरनेडो जीआर4**, यूरोफाइटर टाइफून और राफेल जैसे ट्विन-इंजन एयरक्राफ्ट से लॉन्च किया जा सकता है, जो मिसाइल को ले जाने और तैनात करने के लिए सुसज्जित हैं।
- स्टॉर्म शैडो का इस्तेमाल **लीबियाई गृहयुद्ध (2011), सीरिया और इराक सहित** विभिन्न सैन्य संघर्षों में किया गया है, जो आधुनिक युद्ध परिदृश्यों में इसकी प्रभावशीलता को दर्शाता है।

महत्व और भू-राजनीतिक निहितार्थ:

- स्टॉर्म शैडो/SCALP EG सेना को लंबी दूरी पर सटीकता के साथ बल प्रक्षेपित करने का एक शक्तिशाली साधन प्रदान करता है, जिससे यह ज़मीन पर आक्रमण की आवश्यकता के बिना महत्वपूर्ण दुश्मन संपत्तियों को बेअसर कर सकता है।
- दुश्मन के इलाके में गहराई तक हमला करने की इसकी क्षमता इसे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरों के खिलाफ एक महत्वपूर्ण निवारक बनाती है, क्योंकि यह एक विरोधी की योजना और प्रतिक्रिया को जटिल बनाती है।
- अंतर्राष्ट्रीय रक्षा सहयोग के संदर्भ में **स्टॉर्म शैडो** का उपयोग महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से नाटो के भीतर, जहां सहयोगी बलों में इसकी तैनाती संयुक्त संचालन और अंतर-संचालन को मजबूत करती है।

जी20 शिखर सम्मेलन 2024

खबरों में क्यों? लुइज़ इनासियो लूला दा सिल्वा की अध्यक्षता में ब्राज़ील के रियो डी जेनेरियो में आयोजित जी20 शिखर सम्मेलन 2024

मुख्य केंद्रित क्षेत्र:

इसमें मिश्रित परिणामों वाले महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

जलवायु परिवर्तन: उच्च अपेक्षाओं के बावजूद, कोई महत्वपूर्ण सफलता नहीं मिली। नेताओं ने जलवायु वित्त को अरबों से खरबों तक बढ़ाने की आवश्यकता को स्वीकार किया, लेकिन स्रोतों या प्रतिबद्धताओं को निर्दिष्ट नहीं किया। जीवाश्म ईंधन से दूर एक न्यायसंगत संक्रमण के लिए प्रतिज्ञा की कोई पुनरावृत्ति नहीं हुई।

वैश्विक संघर्ष: यूक्रेन युद्ध ने चर्चाओं पर हावी रहा। जी20 ने शांति पहल का समर्थन किया, लेकिन रूसी आक्रामकता की स्पष्ट रूप से निंदा करने से परहेज किया। गाजा और लेबनान में संघर्षों के लिए युद्धविराम की अपील भी की गई, जिसमें नेताओं ने ऐसे प्रस्तावों का आग्रह किया, जो नागरिकों को सुरक्षित रूप से वापस लौटने की अनुमति देंगे।

भूख गठबंधन:

- राष्ट्रपति लूला ने भूख के खिलाफ एक वैश्विक गठबंधन का नेतृत्व किया, जिसे 82 देशों से समर्थन मिला। इस पहल का उद्देश्य वित्तीय सहायता प्रदान करना और सफल कार्यक्रमों को दोहराना है, जिसका लक्ष्य दशक के अंत तक आधे बिलियन लोगों को लाभ पहुंचाना है।
- धनवानों पर कर लगाना: शिखर सम्मेलन ने असमानताओं को कम करने के लिए अति-उच्च-निवल-मूल्य वाले व्यक्तियों पर कर लगाने पर सहयोग का समर्थन किया। इस ऐतिहासिक कदम का उद्देश्य राष्ट्रीय कर संप्रभुता का सम्मान करते हुए कर पारदर्शिता को बढ़ाना और कर से बचने का मुकाबला करना है।
- डिजिटल और आर्थिक चुनौतियाँ: चर्चाओं में बढ़ती डिजिटल आर्थिक असमानताओं को संबोधित करना और समावेशी विकास को बढ़ावा देना शामिल था। G20 ने समकालीन आर्थिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए IMF और विश्व बैंक जैसे बहुपक्षीय संस्थानों में सुधारों पर भी जोर दिया।

G20 शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी के भाषण की मुख्य बातें:

- रियो डी जेनेरियो में G20 शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषण ने समावेशी विकास, महिला सशक्तिकरण और वैश्विक स्थिरता में भारत की प्रगति पर प्रकाश डाला।
- उन्होंने खाद्य सुरक्षा से निपटने के लिए 'बैंक टू बेसिक्स एंड मार्च टू फ्यूचर' दृष्टिकोण की वकालत की।

समावेशी विकास:

- भारत ने पिछले दशक में 250 मिलियन लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है और 800 मिलियन से अधिक नागरिकों को मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराया है।
- दुनिया के सबसे बड़े स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम के तहत लगभग 550 मिलियन लोग कवर किए गए हैं, और 70 वर्ष से अधिक उम्र के वरिष्ठ नागरिकों को मुफ्त स्वास्थ्य बीमा लाभ दिया गया है।

महिलाओं के नेतृत्व में सशक्तिकरण:

- 300 मिलियन से अधिक महिला सूक्ष्म उद्यमियों को बैंकिंग ऋण तक पहुँच प्राप्त हुई है।
- सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 जैसे अभियानों के तहत महिलाओं के पोषण और स्वास्थ्य पर विशेष जोर दिया गया है।

कृषि नवाचार:

- भारत ने 2,000 से अधिक जलवायु-लचीली फसल किस्मों का विकास किया है और एक डिजिटल कृषि मिशन शुरू किया है।
- किसानों को दुनिया की सबसे बड़ी फसल बीमा योजना के माध्यम से लाभ मिला, जिसमें 40 मिलियन किसानों के लिए \$20 बिलियन का कवरेज शामिल है।

वैश्विक भागीदारी:

- प्रधानमंत्री मोदी ने "भूख और गरीबी के खिलाफ वैश्विक गठबंधन" के लिए ब्राजील की पहल का समर्थन किया और मलावी, जाम्बिया और जिम्बाब्वे जैसे देशों को मानवीय सहायता के माध्यम से वैश्विक खाद्य सुरक्षा के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दोहराया।
- भारत ने खाद्य, ईंधन और उर्वरक आपूर्ति श्रृंखलाओं में वैश्विक दक्षिण की चुनौतियों का समाधान करने के महत्व पर प्रकाश डाला।

पर्यावरणीय स्थिरता:

भारत पोषण समाधान के रूप में बाजरा (श्री एन) को बढ़ावा देते हुए प्राकृतिक, जैविक और टिकाऊ खेती पर ध्यान केंद्रित करता है।

भारत में न्यायिक सुधार: चुनौतियाँ और आगे की राह

एक साल पहले, सुप्रीम कोर्ट के सेंटर फॉर रिसर्च एंड प्लानिंग (CRP) ने 'स्टेट ऑफ द ज्यूडिशियरी' नामक एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी, जिसमें भारत के वर्तमान मुख्य न्यायाधीश (CJI) संजीव खन्ना के सुझावों को जगह मिली है।

लेख में किन चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया है?

- ❖ न्यायिक प्रणाली में प्रशासनिक अड़चनें।
- ❖ अधीनस्थ न्यायालयों में लंबित मामले - **45 मिलियन से अधिक दीवानी** और आपराधिक मामले लंबित हैं

- ❖ आपराधिक न्यायालयों में न्यायिक अधिकारी का 55 प्रतिशत दिन नियमित प्रशासनिक कार्यों जैसे कि समन जारी करना और तारीखें तय करना, पर खर्च होता है, न कि मूल न्यायिक कार्य।
- ❖ **केस प्रबंधन की समस्याएँ** - केस-फ्लो प्रबंधन की खराब व्यवस्था
- ❖ संरचनात्मक मुद्दे - सीमित संसाधन और बुनियादी ढाँचा
- ❖ न्यायाधीशों पर प्रशासनिक बोझ
- ❖ न्यायालय रजिस्ट्री में योग्य लोगों की कमी।
- ❖ देश भर में गैर-न्यायिक कर्मचारियों की 27 प्रतिशत कमी है। बिहार, राजस्थान और तेलंगाना जैसे कुछ राज्यों में यह कमी 50 प्रतिशत के करीब है।

आवश्यक सुधार:

- ❖ न्यायाधीशों के लिए प्रदर्शन मीट्रिक और प्रदर्शन करने वालों के लिए सकारात्मक सुदृढीकरण (अनुसंधान और योजना के लिए एससी केंद्र)
- ❖ अधीनस्थ न्यायालयों के प्रदर्शन की निगरानी के लिए पर्यवेक्षी अधिकारियों (उच्च न्यायालयों) को सशक्त बनाना
- ❖ प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना - वीसी सुविधा - समन आदि
- ❖ न्यायपालिका के बाहर से विशेषज्ञों को शामिल करना
- ❖ प्रशासनिक जिम्मेदारियों से छुटकारा
- ❖ केस निपटान की खुली समीक्षा

खुली समीक्षा क्या है?

खुली समीक्षा में निचली अदालतों द्वारा मामलों का प्रबंधन और निपटान कैसे किया जा रहा है, इसकी पारदर्शी और व्यवस्थित जांच शामिल है।

इसमें शामिल हो सकते हैं:

- न्यायाधीशों और न्यायालय कर्मचारियों का प्रदर्शन ऑडिट।
- लंबित मामलों और देरी के कारणों की निगरानी करना।
- केस प्रबंधन में प्रक्रियागत बाधाओं या अक्षमताओं की पहचान करना।
- विभिन्न प्रकार के मामलों के लिए जवाबदेही और निर्धारित समय-सीमा का पालन सुनिश्चित करना।

केस स्टडी: 1990 के दशक की मोतियाबिंद अंधापन परियोजना-

उठाए गए कदम:

- ई-फाइलिंग
- डिजिटलीकरण
- आधी जिला अदालतें
- दिल्ली उच्च न्यायालय की जीरो पेंडेंसी कोर्ट परियोजना

वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन (ONOS)

चर्चा में क्यों? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली केंद्रीय कैबिनेट ने हाल ही में 'वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन' को मंजूरी दी है, जो विद्वानों के शोध लेखों और जर्नल प्रकाशनों तक देश भर में पहुँच सुनिश्चित करने के लिए एक नई केंद्र सरकार की योजना है।

मोदी सरकार ने इस पहल के लिए तीन साल की अवधि के लिए ₹ 6,000 करोड़ आवंटित किए हैं, जो कि विकसित भारत @ 2047, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 और अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (ANRF) के लक्ष्यों के अनुरूप है।

वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन (ONOS) की मुख्य विशेषताएँ:

- वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन योजना में कुल 30 प्रमुख अंतरराष्ट्रीय जर्नल प्रकाशकों को शामिल किया गया है।
- इन प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित लगभग 13,000 ई-जर्नल 6,300 से अधिक सरकारी उच्च शिक्षा संस्थानों और केंद्र सरकार के अनुसंधान एवं विकास संस्थानों के लिए सुलभ होंगे।
- इस योजना को एक सरल, उपयोगकर्ता के अनुकूल और पूरी तरह से डिजिटल प्रक्रिया के माध्यम से संचालित किया जाएगा।
- तीन कैलेंडर वर्षों - 2025, 2026 और 2027 के लिए कुल लगभग ₹6,000 करोड़ आवंटित किए गए हैं।
- योजना का लाभ एक केंद्रीय एजेंसी, सूचना और पुस्तकालय नेटवर्क (INFLIBNET), जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) का एक स्वायत्त अंतर-विश्वविद्यालय केंद्र है, द्वारा समन्वित राष्ट्रीय सदस्यता के माध्यम से प्रदान किया जाएगा।
- उच्च शिक्षा विभाग के पास एक एकीकृत पोर्टल, वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन होगा, जिसके माध्यम से संस्थान पत्रिकाओं तक पहुँच सकते हैं।
- राज्य सरकारों से भी अनुरोध किया जाएगा कि वे सभी सरकारी संस्थानों के छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं द्वारा इस अनूठी सुविधा का अधिकतम उपयोग करने के लिए अपने स्तर पर अभियान चलाएँ।

पैन 2.0 परियोजना

खबरों में क्यों? केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में पैन 2.0 परियोजना को मंजूरी दी है, जिसके तहत पैन को "व्यवसायों के लिए सामान्य पहचानकर्ता" बनाया जाएगा और पैन को "सत्यता और डेटा स्थिरता का एकमात्र स्रोत" बनाया जाएगा।

- आयकर विभाग द्वारा जारी 10 अंकों का अल्फ़ान्यूमेरिक स्थायी खाता संख्या (पैन) अपग्रेड किया जाएगा, जिसमें सभी नए और पुराने कार्ड में एक क्यूआर कोड शामिल किया जाएगा, एक पूरी तरह से ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया होगी, सभी मौजूदा पहचान संख्याओं को मिलाकर पैन को व्यवसायों के लिए सामान्य पहचानकर्ता बनाया जाएगा, साथ ही डेटा सुरक्षा और साइबर सुरक्षा उद्देश्यों के लिए एक डेटा वॉल्ट सिस्टम भी होगा।
- अपग्रेड के साथ, पैन अधिकारियों के लिए पहचान और सूचना का एक मजबूत स्रोत बनने की उम्मीद है, क्योंकि यह पहले से ही आधार की अन्य पहचान संख्या से जुड़ा हुआ है।
- मौजूदा पैन धारक, जिनकी संख्या लगभग 78 करोड़ है, अपने पैन कार्ड को अपग्रेड कर सकते हैं। मौजूदा उपयोगकर्ताओं के लिए पैन नंबर वही रहेगा, लेकिन कार्ड को अपग्रेड करना होगा, जिसके बारे में सरकार ने कहा कि यह उपयोगकर्ताओं के लिए निःशुल्क होगा।

पैन 2.0 परियोजना क्या है?

- परियोजना के तहत, मौजूदा पैन सिस्टम को पूरी तरह से अपग्रेड किया जाएगा, आईटी बैकबोन को नया रूप दिया जाएगा और निर्दिष्ट सरकारी एजेंसियों की सभी डिजिटल प्रणालियों के लिए पैन को एक सामान्य व्यवसाय पहचानकर्ता बनाया जाएगा।

पैन 2.0 की विशेषताएं क्या हैं?

- सभी नए और मौजूदा पैन कार्ड के लिए क्यूआर-कोड सुविधा के अलावा, **पैन 2.0 परियोजना** का उद्देश्य पैन डेटा का उपयोग करने वाली सभी संस्थाओं के लिए एक एकीकृत पोर्टल के साथ-साथ "अनिवार्य पैन डेटा वॉल्ट सिस्टम" स्थापित करना है। यह डेटा सुरक्षा और साइबर सुरक्षा उद्देश्यों के लिए किया जा रहा है।
- "सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक पैन डेटा वॉल्ट सिस्टम होगा। पैन से संबंधित जानकारी का उपयोग कई संस्थाएँ जैसे बैंक, बीमा कंपनियाँ करती हैं।
- जो (संस्थाएँ) पैन का विवरण लेती हैं, उन्हें अनिवार्य रूप से डेटा वॉल्ट सिस्टम के माध्यम से पैन डेटा को सुरक्षित रखना होगा।
- एक एकीकृत पोर्टल भी होगा क्योंकि मौजूदा सॉफ्टवेयर लगभग **15-20** साल पुराना है।
- **पैन 2.0 परियोजना करदाता पंजीकरण** सेवाओं के प्रौद्योगिकी-संचालित परिवर्तन को सक्षम करेगी, जिसका उद्देश्य पहुँच और सेवा वितरण में आसानी को बेहतर बनाना है।
- यह मौजूदा पैन/टैन 1.0 इको-सिस्टम का अपग्रेड होगा, जिसमें कोर और नॉन-कोर पैन/टैन गतिविधियों के साथ-साथ पैन सत्यापन सेवा को भी एकीकृत किया जाएगा।

व्यक्तियों और व्यवसायों के लिए इसका क्या अर्थ है?

- मौजूदा उपयोगकर्ताओं के पास **पैन 2.0 कार्ड के लिए अपग्रेड** करने का विकल्प होगा। आयकर विभाग द्वारा आवेदन प्रक्रिया और समयसीमा के बारे में विवरण अभी जारी नहीं किया गया है।
- नए और पुराने पैन कार्ड पर क्यूआर-कोड सुविधा का मतलब कर विभाग के साथ वित्तीय लेनदेन के एकीकरण का एक उन्नत स्तर होगा। पैन में क्यूआर कोड की **शुरुआत 2017** में की गई थी।
- "मौजूदा पैन कार्ड धारक पुराने पैन कार्ड को क्यूआर कोड-सक्षम पैन कार्ड में बदल सकते हैं। बिना क्यूआर कोड वाले पुराने पैन कार्ड वाले पैन धारकों के पास क्यूआर कोड वाले नए कार्ड के लिए आवेदन करने का विकल्प है। पैन **2.0 में, आवेदन ऑनलाइन** (कागज़ रहित) जमा किए जाएँगे,"

पैन और टैन की मौजूदा पहचान संख्याएँ क्या हैं?

- 10 अंकों की अल्फ़ान्यूमेरिक संख्या, पैन, आयकर विभाग को किसी व्यक्ति के सभी लेन-देन को विभाग से जोड़ने में सक्षम बनाती है। इन लेन-देन में कर भुगतान, स्रोत पर कर कटौती (टीडीएस) / स्रोत पर कर संग्रह (टीसीएस) क्रेडिट, आयकर रिटर्न, निर्दिष्ट लेन-देन शामिल हैं। इस प्रकार, पैन कर विभाग के साथ व्यक्ति के लिए एक पहचानकर्ता के रूप में कार्य करता है। एक बार पैन आवंटित होने के बाद, यह हमेशा के लिए एक ही रहता है। आयकर रिटर्न दाखिल करते समय पैन का उल्लेख करना अनिवार्य है।
- **TAN का मतलब है कर कटौती** और संग्रह खाता संख्या, जो आयकर विभाग द्वारा जारी किया गया 10 अंकों का अल्फ़ान्यूमेरिक नंबर है। स्रोत पर कर काटने या एकत्र करने के लिए जिम्मेदार सभी व्यक्तियों को TAN प्राप्त करना आवश्यक है। TDS/TCS रिटर्न, किसी भी **TDS/TCS भुगतान चालान, TDS/TCS प्रमाणपत्र** में TAN का उल्लेख करना अनिवार्य है।

बेसिक स्टैटिस्टिकल रिटर्न (BSR)

चर्चा में क्यों? RBI ने हाल ही में तिमाही बेसिक स्टैटिस्टिकल रिटर्न (BSR) जारी किया है।

बेसिक स्टैटिस्टिकल रिटर्न (BSR) क्या है?

यह सांख्यिकीय रिटर्न के एक सेट को संदर्भित करता है जिसे बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) को जमा करना आवश्यक है। ये रिटर्न विभिन्न बैंकिंग गतिविधियों, जैसे जमा, अग्रिम और निवेश के बारे में विस्तृत डेटा एकत्र करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। नीति निर्माण, आर्थिक विश्लेषण और विनियामक उद्देश्यों के लिए यह जानकारी महत्वपूर्ण है।

बेसिक स्टैटिस्टिकल रिटर्न का उद्देश्य:

नीति निर्माण: RBI को मौद्रिक नीतियों को डिज़ाइन करने और उनके प्रभाव का आकलन करने में मदद करता है।

आर्थिक विश्लेषण: बैंकिंग क्षेत्र के रुझानों और अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए डेटा प्रदान करता है।

विनियमन और पर्यवेक्षण: नियामक आवश्यकताओं के अनुपालन की निगरानी में RBI की सहायता करता है।

डेटा प्रसार: शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं और अन्य हितधारकों के लिए सूचना के स्रोत के रूप में कार्य करता है।

बीएसआर रिपोर्ट के प्रकार:

बीएसआर-1 (अग्रिम डेटा):

- बैंकों द्वारा दिए गए ऋणों और अग्रिमों पर विस्तृत जानकारी कैचर करता है।
- मापदंडों में उधारकर्ता का विवरण (क्षेत्र, आकार, उद्देश्य, आदि), ब्याज दरें और ऋण का प्रकार शामिल हैं।

बीएसआर-2 (जमा डेटा):

- बैंकों द्वारा रखी गई जमा राशियों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- इसमें जमा राशियों के प्रकार (बचत, चालू, अवधि), स्वामित्व (व्यक्ति, कॉर्पोरेट, सरकार) और ब्याज दरों के बारे में जानकारी शामिल है।

बीएसआर-4 (ऋण निगरानी व्यवस्था डेटा):

- ऋण निगरानी के लिए बड़े अग्रिमों को शामिल करता है।

बीएसआर-5 और अन्य:

- अन्य बैंकिंग-संबंधित सांख्यिकीय डेटा एकत्र करता है।

वैश्विक सहकारी सम्मेलन 2024

खबरों में क्यों? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में भारत मंडपम में संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 का शुभारंभ किया और एक स्मारक डाक टिकट जारी किया।

- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 का भी शुभारंभ किया।

सम्मेलन के मुख्य बिंदु:

- सम्मेलन का विषय प्रधानमंत्री द्वारा 3 वर्ष पहले दिए गए 'सहकार से समृद्धि' पर आधारित है।
- **2 लाख नई प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पीएसीएस)** के माध्यम से, लगभग सभी ग्राम पंचायतों में सहकारी समिति होगी।
- भारत के किसान राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (**एनसीईएल**), राष्ट्रीय सहकारी जैविक लिमिटेड (**एनसीओएल**) और भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड (**बीबीएसएसएल**) के माध्यम से घरेलू और वैश्विक बाजार तक अपनी पहुंच बढ़ा सकेंगे।
- भारतीय किसान उर्वरक सहकारी (**इफको**), कृषक भारती सहकारी (**कृभको**) और **अमूल** ने दुनिया भर में सहकारी समितियों के क्षेत्र में मिसाल कायम की है।
- सरकार एक **सहकारी विश्वविद्यालय** स्थापित करेगी।

मुख्य उद्देश्य:

- सामाजिक और आर्थिक समानता में योगदान देने वाले लोगों-केंद्रित और उद्देश्य-संचालित संगठनों के रूप में सहकारी समितियों की भूमिका को पुष्टि करना।
- जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहकारी समितियों के योगदान को उजागर करना, जिसमें कार्बन फुटप्रिंट को कम करने और कार्बन तटस्थता की वकालत करने के लिए **10,000 पीपल के पेड़** लगाने जैसी पहल शामिल हैं।
- सहकारी समितियों की प्रभावशीलता को बढ़ाने वाली सहायक नीतियों और उद्यमशील पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए रणनीति विकसित करना। सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के साथ सहकारी पहल

नेतृत्व और लचीलापन को बढ़ावा देना:

- न्यायसंगत, समतापूर्ण और लचीले समाजों के निर्माण के लिए उद्देश्यपूर्ण नेतृत्व को प्रोत्साहित करना
- वैश्विक प्रतिभागियों को विचारों को साझा करने, नवाचारों को प्रदर्शित करने और अंतर-सहकारी सहयोग को मजबूत करने के लिए एक मंच प्रदान करना एक एकीकृत पोर्टल भी होगा क्योंकि मौजूदा सॉफ्टवेयर लगभग **15-20** साल पुराना है।

प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पीएसीएस) के बारे में:

- प्राथमिक कृषि ऋण समितियां (पीएसीएस) भारत में जमीनी स्तर की सहकारी संस्थाएं हैं, जो मुख्य रूप से किसानों की वित्तीय जरूरतों को पूरा करती हैं।
- वे भारत में सहकारी ऋण की तीन-स्तरीय संरचना में सबसे छोटी और सबसे बुनियादी इकाइयाँ हैं, जिनमें शामिल हैं:
- गाँव स्तर पर पीएसीएस।
- जिला स्तर पर जिला केंद्रीय सहकारी बैंक (डीसीसीबी)।
- राज्य स्तर पर राज्य सहकारी बैंक (एससीबी)।

ई-दाखिल पोर्टल का सफल राष्ट्रव्यापी कार्यान्वयन

चर्चा में क्यों? ई-दाखिल पोर्टल अब भारत के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में चालू है।

पोर्टल को 22 नवंबर 2024 को लद्दाख में लॉन्च किया गया, जिससे यह वास्तव में अखिल भारतीय पहल बन गई।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 की पृष्ठभूमि:

- उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 को 20 जुलाई 2020 को अधिसूचित और लागू किया गया था।
- ई-दाखिल की शुरुआत उपभोक्ता चुनौतियों का जवाब थी, खासकर COVID-19 महामारी के दौरान, उपभोक्ता शिकायत दर्ज करने का एक लागत प्रभावी, तेज़ और परेशानी मुक्त तरीका प्रदान करना।

ई-दाखिल पोर्टल का उद्देश्य और विशेषताएँ:

- ई-दाखिल एक ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म है जिसे उपभोक्ता शिकायत निवारण प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- उपभोक्ताओं को अब शिकायत दर्ज करने के लिए यात्रा करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे अपने घर के आराम से ऐसा कर सकते हैं।
- कागज़ रहित और पारदर्शी: यह प्लेटफ़ॉर्म पारदर्शिता और शिकायत दर्ज करने की एक कागज़ रहित प्रक्रिया सुनिश्चित करता है।
- उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफ़ेस: उपभोक्ताओं और अधिवक्ताओं के लिए शिकायत दर्ज करने और प्रगति को ट्रैक करने के लिए आसान नेविगेशन।

प्रमाणीकरण प्रक्रिया: शिकायत दर्ज करने से पहले अपनी पहचान प्रमाणित करने के लिए उपयोगकर्ता ओटीपी या ईमेल एक्टिवेशन के माध्यम से साइन अप करते हैं।

ई-दाखिल का शुभारंभ और विकास:

- पोर्टल को पहली बार 7 सितंबर 2020 को राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (एनसीडीआरसी) द्वारा लॉन्च किया गया था।
- 2023 के अंत तक, यह 35 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों (लद्दाख को छोड़कर) में चालू हो गया था।
- पोर्टल का राष्ट्रीय रोलआउट 22 नवंबर 2024 को लद्दाख पहुंचा, जो भारत के सभी क्षेत्रों में कवरेज प्रदान करता है।

ई-दाखिल की सफलता की कहानियाँ:

संबलपुर जिला आयोग: जनवरी 2024 में एक दोषपूर्ण हीरो इलेक्ट्रिक अटरिया के लिए एक शिकायतकर्ता के पक्ष में फैसला सुनाया गया, जिसमें मुआवजे के रूप में 25,000 रुपये और मुकदमे के खर्च के लिए 5,000 रुपये दिए गए।

अंडमान जिला आयोग: 19 अप्रैल, 2022 को दायर एक मामले के परिणामस्वरूप 25,000 रुपये वापस किए गए। 3,980 रुपये और यूपीआई लेनदेन विफल होने के कारण मानसिक पीड़ा के लिए 10,000 रुपये, ब्याज सहित।

भविष्य का विकास: ई-जागृति पोर्टल

- सरकार ई-जागृति के विकास पर भी काम कर रही है, जो केस फाइलिंग और प्रबंधन प्रक्रिया को और बेहतर बनाने के लिए एक उन्नत प्रणाली है।
- ई-जागृति सभी संबंधित पक्षों के बीच सहज संचार की सुविधा प्रदान करेगी, देरी को कम करेगी, कागजी कार्रवाई को कम करेगी और विवादों का समय पर समाधान सुनिश्चित करेगी।

ई-दाखिल पोर्टल के वर्तमान आँकड़े:

- ई-दाखिल पोर्टल पर 2,81,024 उपयोगकर्ता पंजीकृत हैं।
- प्लेटफॉर्म के माध्यम से 1,98,725 मामले दर्ज किए गए हैं।
- 38,453 मामलों का सफलतापूर्वक निपटारा किया गया है।

जंगली/झाड़ी आग प्रदूषण पर अध्ययन: लैसेट

चर्चा में क्यों? द लैसेट ने हाल ही में जंगली आग प्रदूषण और इसके प्रभावों पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की है।

मुख्य निष्कर्ष:

अग्नि प्रदूषण से वैश्विक मृत्यु दर:

- विश्व स्तर पर हर साल 1.5 मिलियन से अधिक मौतें भू-दृश्य आग से होने वाले प्रदूषण के कारण होती हैं।
- आग से निकलने वाले PM2.5 और ओजोन उत्सर्जन स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों में प्राथमिक योगदानकर्ता हैं।

भारत के आँकड़े:

- भारत में (2000-2019) औसतन हर साल 1.2 लाख मौतें भू-दृश्य आग से होने वाले वायु प्रदूषण से जुड़ी हैं।
- भारत में इस 20 साल की अवधि के दौरान 25.54 लाख मौतें आग से होने वाले वायु प्रदूषण के कारण श्वसन और हृदय संबंधी बीमारियों के कारण हुईं।
- उत्तरी भारत में कृषि जलाना इस प्रदूषण में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है।

सबसे अधिक प्रभावित देश:

आग से संबंधित सबसे बड़ी दुर्घटनाओं वाले शीर्ष पाँच देश:

- चीन

- कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य
- भारत
- इंडोनेशिया
- नाइजीरिया

लैंडस्केप आग के कारण और प्रभाव:

- लैंडस्केप आग में कृषि जलना, जंगल की आग और घास के मैदानों और वनस्पति क्षेत्रों जैसे प्राकृतिक या सांस्कृतिक परिदृश्यों में जंगल की आग शामिल है।
- इन आग के दौरान निकलने वाले महीन **कण पदार्थ (PM2.5)** और ब्लैक **कार्बन** सैकड़ों या हज़ारों किलोमीटर तक फैल सकते हैं, जिससे बहुत बड़ी आबादी प्रभावित होती है।
- **हृदय संबंधी मौतें:** आग प्रदूषण के कारण सालाना **450,000**।
- **श्वसन संबंधी मौतें:** आग से संबंधित वायु प्रदूषण के कारण सालाना **220,000** मौतें।

सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ:

- उच्च आय वाले देशों की तुलना में कम आय वाले देशों में आग से होने वाली मौतें **चार गुना अधिक** हैं।
- कम सामाजिक-आर्थिक देशों में आग प्रदूषण से होने वाली श्वसन संबंधी बीमारियों के कारण होने वाली मौतें अधिक होती हैं।
- अग्नि प्रदूषण के कारण हृदय संबंधी मौतों में वैश्विक स्तर पर प्रति वर्ष **1.67%** की वृद्धि हुई है।

जलवायु परिवर्तन में योगदान:

- भू-भाग में आग लगने से होने वाले **PM2.5 उत्सर्जन का लगभग 90%** हिस्सा जंगल में लगी आग के कारण होता है।
- आग से निकलने वाला काला कार्बन **ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन** में योगदान देता है।
- जलवायु परिवर्तन आग लगने की आवृत्ति और गंभीरता को बढ़ाता है, जिससे फीडबैक लूप बनता है।

निवारक उपाय:

- महाराष्ट्र में, जंगल वाले गांवों से आग पर नज़र रखने और उसे नियंत्रित करने के लिए अग्नि निरीक्षकों को नियुक्त किया जाता है।
- विशेष रूप से सर्दियों के दौरान कृषि अपशिष्ट को जलाने से रोकने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं।
- 2019 में, भारी बारिश के कारण महाराष्ट्र में आग लगने की कम घटनाएँ दर्ज की गईं।

विशेषज्ञों की राय:

- **प्रकाश दोराईस्वामी:** आग वायु प्रदूषण और **दीर्घकालिक जलवायु प्रभावों** में महत्वपूर्ण योगदान देती है। आग से निकलने वाले महीन **कण श्वसन और हृदय संबंधी स्वास्थ्य** पर गंभीर प्रभाव डालते हैं।
- **प्रोफ़ेसर युमिंग गुओ:** जलवायु परिवर्तन के कारण आग लगने की घटनाओं में वृद्धि के साथ अग्नि प्रदूषण से वैश्विक स्वास्थ्य बोझ बढ़ने की उम्मीद है।

कार्रवाई का महत्व:

- अग्नि प्रदूषण के स्वास्थ्य और जलवायु प्रभावों को **कम करने के लिए वायु गुणवत्ता** की निगरानी और निवारक रणनीतियाँ आवश्यक हैं।
- आग की घटनाओं और उनके परिणामों को कम करने के लिए **कृषि पद्धतियों और जलवायु परिवर्तन** जैसे मूल कारणों का समाधान करना महत्वपूर्ण है।

समुद्री कार्बन डाइऑक्साइड निष्कासन (mCDR):

चर्चा में क्यों? जलवायु परिवर्तन को कम करने में महासागर की भूमिका के बारे में यह शब्द हाल ही में चर्चा में रहा।

समुद्री कार्बन डाइऑक्साइड निष्कासन (mCDR) के बारे में:

समुद्री कार्बन डाइऑक्साइड निष्कासन (mCDR) में CO₂ को अवशोषित करने और संग्रहीत करने की महासागर की प्राकृतिक क्षमता को बढ़ाकर वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड (CO₂) के स्तर को कम करने के उद्देश्य से रणनीतियों का एक सेट शामिल है। ये विधियाँ एक महत्वपूर्ण कार्बन सिंक के रूप में महासागर की भूमिका का लाभ उठाती हैं, जो सालाना वैश्विक CO₂ उत्सर्जन का लगभग 25% अवशोषित करता है।

मुख्य mCDR दृष्टिकोण:**महासागर क्षारीयता वृद्धि (OAE):**

- समुद्री जल में सिलिकेट या कार्बोनेट खनिजों जैसे क्षारीय पदार्थों को जोड़ने से महासागर की CO₂ को अवशोषित करने की क्षमता बढ़ जाती है।
- CO₂ को स्थिर बाइकार्बोनेट आयनों में परिवर्तित करता है, जिससे महासागर का अम्लीकरण कम होता है।

महासागर निषेचन:

- फाइटोप्लांकटन वृद्धि को प्रोत्साहित करने के लिए लोहा, नाइट्रोजन या फास्फोरस जैसे पोषक तत्वों को जोड़ना शामिल है।
- फाइटोप्लांकटन प्रकाश संश्लेषण के दौरान CO₂ को अवशोषित करते हैं, और कुछ कार्बन उनकी मृत्यु के बाद कार्बनिक पदार्थ के रूप में समुद्र तल पर डूब जाता है।

कृत्रिम अपवेलिंग और डाउनवेलिंग:

अपवेलिंग: फाइटोप्लांकटन विकास को बढ़ावा देने के लिए पोषक तत्वों से भरपूर गहरे पानी को सतह पर पंप करता है।

डाउनवेलिंग: CO₂-समृद्ध सतही पानी को गहरी परतों में ले जाने में मदद करता है, जहाँ CO₂ सदियों तक संग्रहीत रहता है। मैक्रोएलगी खेती:

CO₂ को पकड़ने के लिए बड़े पैमाने पर समुद्री शैवाल की खेती करना।

काटे गए बायोमास का उपयोग बायोएनर्जी के लिए किया जा सकता है या इसे गहरे समुद्र में डुबोकर अलग किया जा सकता है।

इलेक्ट्रोकेमिकल विधियाँ:

- समुद्री जल से CO₂ को हटाने वाली रासायनिक प्रतिक्रियाओं को प्रेरित करने के लिए बिजली का उपयोग करना।
- हाइड्रोजन या क्षारीयता बढ़ाने वाले यौगिकों जैसे उपोत्पादों का उत्पादन करता है जो कार्बन कैप्चर में और सहायता कर सकते हैं।

प्रत्यक्ष महासागर कैप्चर:

- इंजीनियरिंग सिस्टम का उपयोग करके सीधे समुद्री जल से CO₂ निकालना।
- संकेन्द्रित CO₂ को भूगर्भीय रूप से संग्रहीत किया जा सकता है या औद्योगिक रूप से पुनः उपयोग किया जा सकता है।

mCDR के लाभ:**कार्बन निष्कासन की अपार क्षमता:**

- महासागर का विशाल सतह क्षेत्र और आयतन CO₂ अवशोषण की बेजोड़ क्षमता प्रदान करता है।

समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के लिए सह-लाभ:

- मैक्रोएलगी खेती जैसी कुछ विधियाँ जैव विविधता को बढ़ाती हैं और संधारणीय जलीय कृषि के अवसर प्रदान करती हैं।

जलवायु परिवर्तन शमन:

- ग्रीनहाउस गैस सांद्रता को कम करता है, वैश्विक तापमान स्थिरीकरण में योगदान देता है।

विंडफॉल गेन्स टैक्स

चर्चा में क्यों? सरकार ने हाल ही में कच्चे तेल के घरेलू उत्पादन और डीजल, पेट्रोल और एविएशन टर्बाइन ईंधन (एटीएफ) के निर्यात पर विंडफॉल गेन्स टैक्स वापस ले लिया है, जो 30 महीने पहले रूस के यूक्रेन पर आक्रमण के मद्देनजर अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल और प्रमुख ईंधन की कीमतों में उछाल के बीच शुरू किए गए लेवी को खत्म कर दिया है।

विंडफॉल गेन्स टैक्स के बारे में:

- विंडफॉल गेन्स टैक्स एक बार का या आवर्ती कर है जो व्यक्तियों या व्यवसायों द्वारा अर्जित अप्रत्याशित या असाधारण लाभ पर लगाया जाता है। ये "विंडफॉल" लाभ आमतौर पर कंपनी के आंतरिक प्रदर्शन के बजाय अनुकूल बाहरी परिस्थितियों से उत्पन्न होते हैं, जैसे कि अचानक बाजार में बदलाव, भू-राजनीतिक घटनाएँ या नियामक निर्णय।

विंडफॉल गेन्स टैक्स की मुख्य विशेषताएँ:

- सार्वजनिक लाभ के लिए अनर्जित या अत्यधिक लाभ को पकड़ना।
- अक्सर आय असमानता को दूर करने, कल्याण कार्यक्रमों को निधि देने या संकट के दौरान सार्वजनिक परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए उपयोग किया जाता है।
- वस्तुओं की कीमतों में तेज वृद्धि (जैसे, तेल, गैस, खनिज)।
- आर्थिक घटनाएँ जो कुछ क्षेत्रों (जैसे, वैश्विक संकट के दौरान ऊर्जा कंपनियों) के लिए अनुपातहीन लाभ का कारण बनती हैं।

आमतौर पर मूल्य वृद्धि से लाभ उठाने वाले उद्योगों पर लगाया जाता है, जैसे:

- तेल और गैस
- खनन
- उपयोगिताएँ
- दुर्लभ मामलों में प्रौद्योगिकी या वित्तीय फर्म।

एविएशन टर्बाइन फ्यूल (ATF): एविएशन टर्बाइन फ्यूल (ATF) एक विशेष प्रकार का ईंधन है जिसका उपयोग **जेट इंजन और टर्बोप्रॉप** से लैस विमानों को चलाने के लिए किया जाता है। यह एक उच्च प्रदर्शन वाला ईंधन है जिसे **विमानन की कठिन परिस्थितियों** में सुरक्षा, दक्षता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

ATF की मुख्य विशेषताएँ:

मुख्य रूप से **केरोसिन आधारित ईंधन**, जिसे **कड़े गुणवत्ता मानकों** को पूरा करने के लिए परिष्कृत किया जाता है। बर्फ जमने, जंग लगने से बचाने और थर्मल स्थिरता में सुधार करने के लिए एडिटिव्स शामिल किए जाते हैं।

ATF के प्रकार:

जेट A: आमतौर पर संयुक्त राज्य अमेरिका में उपयोग किया जाता है।

जेट A-1: भारत सहित विश्व स्तर पर उपयोग किया जाता है, और इसका हिमांक बिंदु कम होता है (**जेट A के लिए -47°C बनाम -40°C**)।

जेट B: शायद ही कभी उपयोग किया जाता है, अपने कम **हिमांक बिंदु** लेकिन **उच्च अस्थिरता** के कारण अत्यधिक ठंडे मौसम के लिए उपयुक्त है।

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

अधिकतम दक्षता के लिए उच्च ऊर्जा घनत्व।

उच्च ऊंचाई पर ठंडे तापमान को झेलने के लिए कम हिमांक बिंदु।

इंजन जमाव को रोकने के लिए थर्मल और ऑक्सीडेटिव स्थिरता।

भारत में तटीय कटाव: एक बढ़ता संकट

चर्चा में क्यों? हाल ही में लोकसभा सत्र में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि भारत की **33.6% तटरेखा कटाव** के खतरे में है, जिससे मजबूत तटीय प्रबंधन की आवश्यकता पर बल मिलता है।

भारत की तटरेखा:

- 7,500 किलोमीटर से अधिक में फैले भारत के तट में 9 राज्य, 2 केंद्र शासित प्रदेश और 66 तटीय जिले शामिल हैं।
- **तटीय आकृति विज्ञान:** 43% रेतीले समुद्र तट, 11% चट्टानी तट, 36% कीचड़ भरे मैदान, 10% दलदली क्षेत्र, 97 नदियाँ और 34 लैगून।

कटाव की सीमा:

- **तटरेखा का 33.6%** हिस्सा कटाव का सामना कर रहा है, जबकि **26.9%** में वृद्धि दिख रही है और **39.6%** स्थिर है (एनसीसीआर डेटा)।

राज्यवार मुख्य अंश:

- **कर्नाटक:** दक्षिण कन्नड़ की 48.4% तटरेखा का कटाव हो चुका है।
- **पश्चिम बंगाल:** 60.5% कटाव, विशेष रूप से सुंदरबन में।
- **केरल:** 46.4% तटरेखा का कटाव हुआ।
- **तमिलनाडु:** 42.7% तटरेखा प्रभावित हुई।

तटीय कटाव के कारण:

प्राकृतिक कारक:

- लहरों की गतिविधि, समुद्र-स्तर में वृद्धि, तूफानी लहरें और चक्रवात।

मानवजनित कारक:

- तटीय विकास, अवैध रेत खनन और मैंग्रोव का वनों की कटाई।

प्रभाव:

- कृषि और आवास को प्रभावित करने वाली भूमि का नुकसान।
- समुदायों का विस्थापन, जिससे सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ पैदा होती हैं।
- सड़कों, पुलों और इमारतों को बुनियादी ढाँचे को नुकसान।
- मैंग्रोव, प्रवाल भित्तियों और आर्द्रभूमि में जैव विविधता का नुकसान।

शमन उपाय:

नीतिगत पहल:

- गुजरात, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में एकीकृत तटीय क्षेत्र प्रबंधन परियोजना (ICZMP)।
- तटीय विनियमन क्षेत्र (सीआरजेड) अधिसूचना (2019) जिसमें नो-डेवलपमेंट ज़ोन (एनडीजेड) शामिल हैं।

- तटीय भेद्यता सूचकांक (सीवीआई) और आईएनसीओआईएस द्वारा बहु-खतरा भेद्यता मानचित्र।

नवीन इंजीनियरिंग:

- कृत्रिम चट्टानें, पर्यावरण के अनुकूल ब्रेकवाटर और जियो-ट्यूब इंस्टॉलेशन (जैसे, ओडिशा का पेंथा गांव)।

पारिस्थितिकी तंत्र-आधारित समाधान:

- तटीय क्षेत्रों को स्थिर करने के लिए मैंग्रोव वृक्षारोपण और आश्रय-बेल्ट वनस्पति।

समुदाय और जागरूकता:

- तटीय पारिस्थितिकी तंत्र के महत्व पर समुदाय द्वारा संचालित संरक्षण और शिक्षा अभियान।

निष्कर्ष:

तटीय कटाव को संबोधित करने के लिए भारत के तटीय पारिस्थितिकी तंत्र और आजीविका की सुरक्षा के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान, सामुदायिक भागीदारी और सतत विकास को मिलाकर एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

सुगम्य भारत अभियान: उपलब्धियाँ

चर्चा में क्यों? सुगम्य भारत अभियान के 9 वर्ष पूरे होने पर हाल ही में प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाश डाला गया।

लेख सुगम्य भारत अभियान (सुलभ भारत अभियान) को भारत में विकलांग व्यक्तियों (PwD) के लिए एक समावेशी वातावरण बनाने के लिए शुरू की गई एक परिवर्तनकारी पहल के रूप में उजागर करता है। यह पिछले नौ वर्षों में इसकी उपलब्धियों और **विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम (SIPDA)** के कार्यान्वयन के लिए व्यापक योजना में इसके परिवर्तन को दर्शाता है, जो सुलभता को एक सतत राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में महत्व देता है।

मुख्य बिंदु:

पृष्ठभूमि:

- दिव्यांगों के लिए सुलभता सुनिश्चित करने के लिए भारत के पिछले प्रयास असंरचित थे।
- सुगम्य भारत अभियान, जिसे 2015 में शुरू किया गया था, का उद्देश्य लागू करने योग्य मानक निर्धारित करके विकलांग व्यक्ति **अधिनियम, 1995** में कमियों को दूर करना था।

उपलब्धियाँ:

- **बुनियादी ढाँचा:** 1,700 से अधिक सरकारी भवनों का नवीनीकरण तथा 1,671 अन्य में सुगम्यता का ऑडिट।
- **परिवहन:** सुगम्यता सुविधाओं के साथ हवाई अड्डों, रेलवे स्टेशनों, **बसों तथा बस स्टेशनों** में सुधार।
- **डिजिटल सुगम्यता:** 95 केंद्र सरकार तथा **676 राज्य सरकार की वेबसाइटों** को सुगम्य बनाना।
- **शिक्षा एवं मीडिया:** भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र (आईएसएलआरटीसी) की स्थापना तथा सुगम्य टीवी सामग्री को बढ़ावा देना।
- **जागरूकता:** सुगम्यता मुद्दों की रिपोर्टिंग के लिए सुगम्य भारत ऐप लॉन्च करना तथा तकनीकी शिक्षा में पाठ्यक्रम विकास आरंभ करना।

जारी प्रयास:

- विभिन्न क्षेत्रों के लिए क्षेत्र-विशिष्ट सुगम्यता दिशा-निर्देश।
- पहुँच लेखा परीक्षकों तथा वेब डेवलपर्स के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- तीर्थ स्थलों के लिए सुगम्यता पहल तथा सार्वभौमिक सुगम्यता कार्यशालाएँ।

वित्तीय प्रतिबद्धता:

- दिव्यांगजन सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण बजट वृद्धि, 2023-24 में ₹1,143.89 करोड़ व्यय, जो निरंतर सरकारी फोकस को दर्शाता है।

आगे की राह:

- **अभियान का SIPDA में एकीकरण** एक पूर्ण रूप से सुलभ समाज की दिशा में निरंतर प्रगति सुनिश्चित करता है।
- दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने के लिए नवाचार, हितधारक सहयोग और निरंतर वित्त पोषण पर जोर।

निष्कर्ष:

सुगम्य भारत अभियान ने सुलभता और समावेशिता के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया है, जिससे दिव्यांगजनों के लिए सम्मान और स्वतंत्रता सुनिश्चित हुई है। इसकी उपलब्धियाँ और **व्यापक योजनाओं में एकीकरण** एक समतापूर्ण समाज बनाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।

विश्व वन्यजीव संरक्षण दिवस

विश्व वन्यजीव संरक्षण दिवस (4 दिसंबर) न केवल देश की समृद्ध जैव विविधता का जश्न मनाने का अवसर है, बल्कि यह भी मूल्यांकन करता है कि क्या **गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजातियों** की रक्षा के लिए पर्याप्त कदम उठाए जा रहे हैं, जो यहां अपना घर ढूंढती हैं।

भारत की समृद्ध जैव विविधता और वैश्विक महत्व:

जैव विविधता सांख्यिकी:

- भारत दुनिया के केवल **2.4% भूमि क्षेत्र** को कवर करता है, लेकिन दर्ज **प्रजातियों का 7-8% हिस्सा** यहीं पर है।
- **45,000 पौधों की प्रजातियाँ** और **91,000 पशु प्रजातियाँ** यहाँ पाई जाती हैं, जो इसे एक महाविविध देश के रूप में वर्गीकृत करने में योगदान देती हैं।

जैवभौगोलिक क्षेत्र और हॉटस्पॉट:

- भारत में **10 जैवभौगोलिक क्षेत्र** हैं और यह **34 वैश्विक रूप से मान्यता प्राप्त जैवविविधता हॉटस्पॉट** में से चार का घर है:
 1. हिमालय
 2. इंडो-बर्मा
 3. पश्चिमी घाट-श्रीलंका
 4. सुंदरलैंड

सह-अस्तित्व की चुनौती:

विकास के साथ संघर्ष:

- भारत की बढ़ती आबादी और आर्थिक प्रक्षेपवक्र भूमि, लकड़ी, कोयला और वन उपज जैसे प्राकृतिक संसाधनों की मांग करते हैं, जिससे आवास विनाश होता है।

वन्यजीवों के लिए सांस्कृतिक श्रद्धा:

- भारतीय पौराणिक कथाओं और परंपराओं में अक्सर वन्यजीवों को बहुत सम्मान दिया जाता है।

- अफ्रीका के बाड़बंद रिजर्व के विपरीत, भारतीय वन्यजीव रिजर्व खुले हैं, और मनोरंजक गतिविधि के रूप में शिकार पर प्रतिबंध है।

गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजातियाँ:

- 2022 तक, भारत में 73 गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजातियाँ हैं (2011 में 47 से वृद्धि)।
- यह वृद्धि प्रजातियों में गिरावट और पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा बेहतर डेटा निगरानी दोनों को दर्शाती है।

स्थानिक स्तनधारी:

- नौ गंभीर रूप से लुप्तप्राय स्तनधारी प्रजातियों में से आठ स्थानिक हैं, जो विशिष्ट क्षेत्रों तक ही सीमित हैं:
- उदाहरण: कश्मीरी हिरण (हंगुल), मालाबार बड़े-धब्बेदार सिवेट, अंडमान शू, निकोबार शू, नमदाफा उड़ने वाली गिलहरी।

अन्य प्रजातियों पर सीमित ध्यान:

बड़ी बिल्लियों पर पर्यटन का ध्यान:

- शेर, बाघ और चीते अपने पर्यटन आकर्षण के कारण महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित करते हैं, लेकिन गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजातियों का केवल एक अंश ही दर्शाते हैं।

उपेक्षित पक्षी:

- ग्रेट इंडियन बस्टर्ड जैसी प्रजातियाँ खतरों का सामना करती हैं (जैसे, राजस्थान में बिजली की लाइनें) लेकिन उन्हें अपर्याप्त संरक्षण ध्यान मिलता है।

निष्कर्ष:

जबकि भारत की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत वन्यजीव संरक्षण को बढ़ावा देती है, आर्थिक विकास और आवास संघर्ष महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पेश करते हैं। गंभीर रूप से संकटग्रस्त प्रजातियों की बढ़ती संख्या संरक्षण प्रयासों और जन जागरूकता को बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।

झील-प्रभाव वाली बर्फ

चर्चा में क्यों? छुट्टियों में यात्रा और खरीदारी के व्यस्त सप्ताहांत के दौरान न्यूयॉर्क, पेंसिल्वेनिया और मिशिगन के कुछ हिस्सों में मौसम की पहली बड़ी बर्फबारी हुई। इस सप्ताह भी ठंड और भारी बर्फबारी जारी रहने की उम्मीद है, जिससे ग्रेट लेक्स, मैदानी इलाकों और मध्य-पश्चिमी क्षेत्रों में खतरे पैदा हो सकते हैं।

झील-प्रभाव वाली बर्फ की प्रकृति: मुलायम और हल्की

- झील-प्रभाव वाली बर्फ की विशेषता इसकी कम पानी की मात्रा है, जो इसे हल्का, मुलायम और जल्दी से जमा होने में सक्षम बनाती है।
- झील-प्रभाव वाली बर्फ में बर्फ-से-पानी का अनुपात 40:1 तक पहुँच सकता है, जबकि मानक बर्फबारी में सामान्य 10:1 अनुपात होता है।

झील-प्रभाव वाली बर्फ का निर्माण:

- यह तब बनता है जब ठंडी, शुष्क आर्कटिक हवा ग्रेट लेक्स जैसी बड़ी झीलों के गर्म, बिना जमे पानी के ऊपर से गुजरती है।
- झील से गर्मी और नमी ऊपर उठती है, जिससे बर्फ बनाने वाले बादलों की संकरी पट्टियाँ बनती हैं।

- हवा की दिशा यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है कि किन क्षेत्रों में बर्फबारी होगी।

बर्फ की पट्टी: जहाँ बर्फ सबसे ज़्यादा गिरती है

- 20+ मील की दूरी पर स्थित क्षेत्र, अक्सर पहाड़ी इलाकों के साथ, अतिरिक्त लिफ्ट के कारण सबसे ज़्यादा बर्फबारी होती है।
- बर्फबारी बहुत ज़्यादा स्थानीय होती है, जिसमें एक क्षेत्र में भारी बर्फबारी होती है और कुछ ही मील दूर आसमान साफ़ होता है।

झील-प्रभाव वाली बर्फ का मौसमी समय:

- मुख्य रूप से पतझड़ और शुरुआती सर्दियों में झीलों के जमने से पहले होता है।
- अगर झीलें जमी नहीं रहती हैं तो वसंत तक जारी रह सकती हैं।

रिकॉर्ड तोड़ने वाली बर्फबारी:

- बफ़ेलो, सिरैक्यूज़ और रोचेस्टर जैसे पश्चिमी न्यूयॉर्क शहरों में हर साल 8 फ़ीट से ज़्यादा बर्फ गिरती है।
- मोंटेग, NY में 24 घंटे में 6.5 फ़ीट बर्फ गिरने का अनौपचारिक रिकॉर्ड है (जनवरी 1997)।
- 20 मिनट में 5 इंच बर्फ और गरज के साथ बर्फबारी जैसी चरम घटनाएँ उल्लेखनीय घटनाएँ हैं।

ग्रेट लेक्स से परे: अन्य स्थान:

- झील-प्रभाव वाली बर्फ केवल ग्रेट लेक्स तक ही सीमित नहीं है; यह यूटा की ग्रेट साल्ट लेक जैसे अन्य बड़े जल निकायों के पास भी होती है।

झील-प्रभाव वाली बर्फ के प्रति स्थानीय दृष्टिकोण:

- सिरैक्यूज़ जैसे बर्फ-प्रवण क्षेत्रों के निवासी भारी बर्फबारी को स्वीकार करते हैं, क्योंकि वे इसे तूफान या बाढ़ जैसी अन्य प्राकृतिक आपदाओं से बेहतर मानते हैं।
- यह संरचना लेख के मुख्य बिंदुओं का एक स्पष्ट और संक्षिप्त सारांश प्रदान करती है।

फ़्रेडशोरिंग और रीशोरिंग

चर्चा में क्यों? हाल ही में इन शब्दों का प्रयोग एक लेख में किया गया था

फ़्रेडशोरिंग क्या है?

- फ़्रेडशोरिंग का तात्पर्य आपूर्ति श्रृंखलाओं और विनिर्माण कार्यों को उन देशों में स्थानांतरित करने की प्रथा से है जो राजनीतिक और आर्थिक रूप से गृह देश के साथ जुड़े हुए हैं, अक्सर भू-राजनीतिक तनावों से जुड़े जोखिमों को कम करने और स्थिर व्यापार संबंधों को सुनिश्चित करने के लिए।

मुख्य विशेषताएं:

- विश्वसनीय व्यापार भागीदारों या सहयोगियों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- प्रतिबंधों, व्यापार प्रतिबंधों या राजनीतिक अस्थिरता जैसे जोखिमों को कम करने का लक्ष्य रखता है।
- शुद्ध लागत लाभों पर सुरक्षित और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं को प्राथमिकता देता है।
- उदाहरणों में यू.एस. द्वारा भारत, वियतनाम या मैक्सिको जैसे सहयोगी देशों में आपूर्ति श्रृंखला में बदलाव को प्रोत्साहित करना शामिल है, विशेष रूप से सेमीकंडक्टर और फार्मास्यूटिकल्स जैसे महत्वपूर्ण सामानों के लिए।

लाभ:

- स्थिर सहयोगियों पर भरोसा करके आर्थिक सुरक्षा को बढ़ाता है।
- **चीन जैसे एकल या प्रतिकूल देशों** पर अत्यधिक निर्भरता को कम करता है।

- **रणनीतिक भू-राजनीतिक लक्ष्यों** के साथ व्यापार को संरक्षित करता है।

रीशोरिंग:

रीशोरिंग में विदेशों से विनिर्माण और आपूर्ति श्रृंखलाओं को गृह देश में वापस लाना शामिल है। यह विदेशी उत्पादन पर निर्भरता कम करने और घरेलू क्षमताओं को बढ़ाने पर केंद्रित है।

मुख्य विशेषताएं:

- स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करने के लिए घरेलू उत्पादन पर जोर देता है।
- आपूर्ति श्रृंखला व्यवधान, उच्च परिवहन लागत और व्यापार शुल्क जैसी चुनौतियों का जवाब देता है।
- सरकारी प्रोत्साहनों, जैसे कि कर छूट या घरेलू विनिर्माण के लिए सब्सिडी द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है।

लाभ:

- नौकरियाँ पैदा करता है और घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार व्यवधानों** के प्रति संवेदनशीलता को कम करता है।
- आपूर्ति श्रृंखलाओं को छोटा करता है, प्रतिक्रिया समय में सुधार करता है और कार्बन पदचिह्नों को कम करता है।

विदेशी मुद्रा अनिवासी (बैंकिंग) एफसीएनआर (बी)

चर्चा में क्यों? भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने विदेशी मुद्रा अनिवासी (बैंकिंग) एफसीएनआर (बी) जमाराशियों पर ब्याज दर की अधिकतम सीमा बढ़ा दी है, ताकि **विदेशी मुद्रा प्रवाह को और अधिक आकर्षित** किया जा सके। एफसीएनआर (बी) जमाराशियां विदेशी मुद्रा सावधि जमाराशियां हैं, जिन्हें **अनिवासी भारतीय** (एनआरआई) भारतीय बैंकों में खोल सकते हैं।

मुख्य विवरण:

संशोधित ब्याज दर अधिकतम सीमा:

- **1 वर्ष से लेकर 3 वर्ष से कम परिपक्वता** अवधि वाली जमाराशियों के लिए:
- ब्याज दरें अब ओवरनाइट अल्टरनेटिव रेफरेंस रेट (एआरआर) + 400 आधार अंक (बीपीएस) तक बढ़ सकती हैं।
- पहले, **अधिकतम सीमा एआरआर + 250** बीपीएस थी।
- **3 से 5 वर्ष की परिपक्वता** अवधि वाली जमाराशियों के लिए:
- **ब्याज दरें अब एआरआर + 500 बीपीएस** तक बढ़ सकती हैं, जबकि पहले यह एआरआर + 350 बीपीएस थी।

विदेशी मुद्रा अनिवासी (बैंकिंग) [एफसीएनआर (बी)] जमाराशियां क्या हैं?

- ये भारतीय बैंकों द्वारा अनिवासी भारतीयों (एनआरआई) और भारतीय मूल के व्यक्तियों (पीआईओ) को दिए जाने वाले विशेष बैंक खाते हैं। ये **खाते विदेशी मुद्राओं** में रखे जाते हैं, जिससे एनआरआई अपनी विदेशी आय को मूलधन या ब्याज पर मुद्रा में उतार-चढ़ाव के जोखिम के बिना भारत में रख सकते हैं।

एफसीएनआर(बी) जमा की मुख्य विशेषताएं:

मुद्रा विकल्प:

- खाते प्रमुख विदेशी मुद्राओं जैसे यूएसडी, जीबीपी, यूरो, जेपीवाई, एयूडी, सीएडी, आदि में रखे जाते हैं।

अवधि:

- न्यूनतम अवधि: **1 वर्ष**।
- अधिकतम अवधि: **5 वर्ष**।

ब्याज दरें:

- बैंक LIBOR या नई वैकल्पिक संदर्भ दरों (ARRs) जैसे वैश्विक बेंचमार्क के आधार पर ब्याज दरें प्रदान करते हैं।

प्रत्यावर्तन:

- मूलधन और ब्याज दोनों पूरी तरह से प्रत्यावर्तनीय हैं (एनआरआई के निवास के देश में वापस स्थानांतरित किए जा सकते हैं)।

कर लाभ:

- अर्जित ब्याज भारतीय आयकर से मुक्त है।
- इन जमाओं पर कोई संपत्ति कर या उपहार कर नहीं है।

जोखिम-मुक्त रिटर्न:

- चूंकि जमाराशि विदेशी मुद्रा में रखी जाती है, इसलिए वे एनआरआई को मुद्रा विनिमय जोखिमों से बचाती हैं।

विश्व सूखा एटलस 2024

चर्चा में क्यों? यूएनसीसीडी और यूरोपीय आयोग जेआरसी द्वारा संयुक्त रूप से विकसित विश्व सूखा एटलस, सूखे के जोखिमों की प्रणालीगत प्रकृति का गहन दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह ऊर्जा, कृषि, परिवहन और सार्वजनिक स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में सूखे के व्यापक प्रभावों को दर्शाने के लिए मानचित्रों, इन्फोग्राफिक्स और केस स्टडी का उपयोग करता है।

मुख्य बिंदु:

- सूखे के प्रति सहनशीलता पर वैश्विक कार्रवाई की तत्काल आवश्यकता:
- जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के कुप्रबंधन के कारण **2000 से सूखे में 29% की वृद्धि** हुई है।
- **2050 तक, वैश्विक स्तर पर चार में से तीन लोग सूखे से प्रभावित हो सकते हैं**, जो जोखिमों को कम करने के लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता पर बल देता है।

क्षेत्रीय प्रभाव और अंतर्संबंध:

ऊर्जा: सूखे के दौरान जलविद्युत में कमी से ऊर्जा की कीमतें बढ़ जाती हैं और बिजली की कटौती होती है।

कृषि: मीठे पानी के उपयोग का **70% हिस्सा होने के कारण, कृषि गंभीर** रूप से प्रभावित है, जिससे खाद्य असुरक्षा और बढ़ जाती है।

जलमार्ग और व्यापार: सूखे के कारण कम जल स्तर परिवहन को बाधित करता है, जैसा कि **पनामा नहर** जैसे मामलों में देखा गया है।

पारिस्थितिकी तंत्र: जैव विविधता का नुकसान सूखे के जोखिम को बढ़ाता है, जबकि अधिक जैव विविधता लचीलापन बढ़ा सकती है।

मानव निर्मित सूखा और आभासी जल हस्तांतरण:

- मानव गतिविधियाँ, जैसे जल संसाधनों का अत्यधिक उपयोग, सूखे को बढ़ाती हैं।
- आभासी जल हस्तांतरण की अवधारणा दर्शाती है कि जल-तनावग्रस्त क्षेत्रों से कृषि निर्यात स्थानीय सूखे के प्रभावों को कैसे तीव्र करता है।

वैश्विक क्षेत्रों से केस स्टडीज़:

- एटलस सूखा-ग्रस्त क्षेत्रों से सबक पर प्रकाश डालता है, जिसमें शामिल हैं:
- **ग्रेट प्लेन्स, यूएसए:** कृषि और ऊर्जा पर बड़े पैमाने पर सूखे के प्रभावों की अंतर्दृष्टि।

- **बार्सिलोना, स्पेन:** शहरी सूखा प्रबंधन में चुनौतियाँ।
 - **यांग्ज़ी नदी बेसिन, चीन:** जल सुरक्षा और जैव विविधता पर प्रभाव।
- भारतीय उपमहाद्वीप और हॉर्न ऑफ़ अफ़्रीका:** सामाजिक-आर्थिक परिणाम और हाशिए पर पड़े समुदायों की दुर्दशा।

सूखे के प्रति सहनशीलता विकसित करने के उपाय:

एटलस में सूखे के जोखिमों के प्रबंधन और अनुकूलन के लिए कार्रवाई योग्य कदम प्रस्तावित किए गए हैं:

शासन: प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, सूक्ष्म बीमा और जल-मूल्य निर्धारण सुधार।

भूमि प्रबंधन: कृषि वानिकी, पुनर्वनीकरण और भूमि बहाली पहल।

जल प्रबंधन: अपशिष्ट जल का पुनः उपयोग, भूजल पुनर्भरण और संरक्षण प्रौद्योगिकियाँ।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की भूमिका:

- अंतर्राष्ट्रीय सूखा सहनशीलता गठबंधन (IDRA) और अन्य वैश्विक नेटवर्क ज्ञान साझा करने और सर्वोत्तम प्रथाओं को लागू करने में महत्वपूर्ण हैं।
- **रियाद में 197 UNCCD सदस्य देशों** के बीच सहयोग सभी स्तरों पर सूखे से निपटने के लिए आवश्यक सामूहिक प्रयास को रेखांकित करता है।

सक्रिय सूखा प्रबंधन के लिए कार्रवाई का आह्वान:

- एटलस सरकारों, व्यवसायों और नीति निर्माताओं के लिए एक रैली बिंदु के रूप में कार्य करता है:
- राष्ट्रों को नीति और शासन में सूखा सहनशीलता को एकीकृत करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- पारिस्थितिकी तंत्र, अर्थव्यवस्था
- ओं और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए सक्रिय उपायों के सह-लाभों पर प्रकाश डालता है।

UNCCD COP16 के लिए मार्ग:

इस प्रकाशन का उद्देश्य रियाद में होने वाले आगामी **UNCCD COP16** में निर्णायक कार्रवाई के लिए गति बनाना है। यह वैज्ञानिक ज्ञान को नीति और कार्रवाई योग्य रणनीतियों में बदलने पर जोर देता है ताकि सूखे से निपटने वाला भविष्य सुनिश्चित हो सके।

प्रारंभिक परीक्षा के लिए तथ्य

लिग्रोसैट

चर्चा में क्यों? हाल ही में लिग्रोसैट नामक पहला लकड़ी-पैनल वाला उपग्रह अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया। इस अंतरिक्ष यान का उद्देश्य भविष्य के अंतरिक्ष मिशनों के लिए नवीकरणीय निर्माण सामग्री के रूप में लकड़ी की व्यवहार्यता का पता लगाना है।

इसे क्योटो विश्वविद्यालय ने **सुमितोमो वानिकी, लिग्रोसैट** के सहयोग से विकसित किया है

लिग्रोसैट क्या है?

- लिग्रोसैट एक कॉम्पैक्ट उपग्रह है जिसकी प्रत्येक तरफ सिर्फ 10 सेंटीमीटर माप है और इसका वजन 900 ग्राम है। इसे मैग्नोलिया की लकड़ी से बने पैनलों से बनाया गया है। डिज़ाइन में पेंच या गोंद के बिना पारंपरिक जापानी शिल्प कौशल का इस्तेमाल किया गया है। "लिग्रोसैट" नाम लकड़ी के लिए लैटिन शब्द से लिया गया है, जो इसकी अनूठी संरचना को दर्शाता है।

मिशन का उद्देश्य:

- मिशन का उद्देश्य अंतरिक्ष की कठोर परिस्थितियों में लकड़ी के स्थायित्व का परीक्षण करना है। अंतरिक्ष में तापमान नाटकीय रूप से बदल सकता है, हर **45 मिनट में -100 से 100 डिग्री सेल्सियस** तक। लिग्रोसैट अंतरिक्ष विकिरण से अर्धचालकों को ढालने में लकड़ी की प्रभावशीलता का भी आकलन करेगा।

बुकर पुरस्कार 2024

सामंथा हार्वे ने अपने उपन्यास "ऑर्बिटल" के लिए प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार जीता है। पुरस्कार समारोह 12 नवंबर, 2024 को हुआ। हार्वे की पुस्तक अंतर्राष्ट्रीय **अंतरिक्ष स्टेशन पर जीवन** की एक अनूठी खोज है। यह मानवीय संबंधों और पृथ्वी की सुंदरता को दर्शाती है। उपन्यास COVID-19 महामारी के दौरान अनुभव किए गए अलगाव से प्रेरित था।

बुकर पुरस्कार के बारे में:

- यह दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कारों में से एक है, जिसे **1969** में अंग्रेजी में लिखे गए उत्कृष्ट उपन्यासों को मान्यता देने के लिए स्थापित किया गया था।

- शुरू में, यह **राष्ट्रमंडल, आयरलैंड और दक्षिण अफ्रीका** के लेखकों तक ही सीमित था, लेकिन **2014** में, पात्रता को अंग्रेजी में लिखे गए और **यूनाइटेड किंगडम** में प्रकाशित किसी भी उपन्यास तक बढ़ा दिया गया।
- इससे दुनिया भर के लेखकों के लिए प्रतियोगिता खुल गई, जिससे **साहित्यिक दुनिया** में इसका प्रभाव और महत्व बढ़ गया।

फ़्लू गैस डिसल्फ़राइज़ेशन (FGD)

फ़्लू गैस डिसल्फ़राइज़ेशन (FGD) बिजली संयंत्रों, औद्योगिक सुविधाओं और अन्य दहन प्रक्रियाओं में जीवाश्म ईंधन को जलाने से उत्पन्न निकास गैसों से सल्फर डाइऑक्साइड (SO₂) को हटाने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। यह वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए उपयोग की जाने वाली एक प्रमुख तकनीक है, विशेष रूप से कड़े उत्सर्जन नियमों का अनुपालन करने के लिए।

FGD का महत्व:

- अम्लीय वर्षा और श्वसन संबंधी बीमारियों में प्राथमिक योगदानकर्ता SO₂ उत्सर्जन को कम करता है।
- उद्योगों को विनियामक मानकों को पूरा करने में मदद करता है, जैसे कि थर्मल पावर प्लांट के लिए भारत के SO₂ उत्सर्जन मानदंड।
- SO₂ जोखिम से जुड़े स्वास्थ्य जोखिमों को कम करता है, जैसे कि अस्थमा और फेफड़ों की बीमारियाँ।
- जिप्सम जैसे उप-उत्पादों का उपयोग निर्माण और कृषि जैसे उद्योगों में किया जा सकता है।

नरसापुर लेस क्राफ्ट

प्रसिद्ध नरसापुर लेस क्राफ्ट ने हाल ही में प्रतिष्ठित भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग प्राप्त किया है।

नरसापुर लेस क्राफ्ट एक पारंपरिक हस्तशिल्प है जो भारत के आंध्र प्रदेश के पश्चिमी गोदावरी जिले के नरसापुर क्षेत्र से उत्पन्न हुआ है।

नरसापुर लेस क्राफ्ट के बारे में:

- यह शिल्प औपनिवेशिक काल से है, जिसे **19वीं शताब्दी** में आयरिश मिशनरियों द्वारा पेश किया गया था।
- स्थानीय महिलाओं ने तकनीकों को अपनाया, क्रोकेट का उपयोग करके एक अनूठी शैली बनाई।
- इसमें क्रोकेट लेस-मेकिंग शामिल है, जो महीन धागे और हुक वाली सुई का उपयोग करके सुई का काम करने का एक रूप है।
- पैटर्न जटिल हैं, और प्रक्रिया पूरी तरह से हस्तनिर्मित है।
- मुख्य सामग्री **कपास और रेशम** के धागे हैं।
- नाजूक लेस पैटर्न बनाने के लिए इन्हें जीवंत रंगों में रंगा जाता है।
- आइटम में **मेज़पोश, पर्दे, डोली, परिधान, बेडस्प्रेड और बैग** और टोपी जैसे सामान शामिल हैं।

डिज़ाइन:

- डिज़ाइन प्रकृति से प्रेरित हैं, जिसमें फूल, पत्ते और ज्यामितीय पैटर्न शामिल हैं।

नागरी दुबराज चावल

भौगोलिक संकेत रजिस्ट्री ने छत्तीसगढ़ के सुगंधित चावल, नागरी दुबराज को भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग प्रदान किया है, जिससे ब्रांड को एक विशिष्ट पहचान और व्यापक बाजार प्राप्त करने में मदद मिली है।

नागरी दुबराज चावल के बारे में:

- नागरी दुबराज चावल भारत में उगाई जाने वाली सुगंधित चावल की एक प्रीमियम किस्म है, विशेष रूप से छत्तीसगढ़ के नागरी क्षेत्र में।
- अपनी विशिष्ट सुगंध और गुणवत्ता के लिए जाना जाता है, इसे अक्सर "छत्तीसगढ़ का बासमती" कहा जाता है।
- **उत्पत्ति और खेती:**
- मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ में, अक्सर पारंपरिक, छोटे पैमाने पर, जैविक खेती प्रथाओं में खेती की जाती है।
- यह किस्म क्षेत्र की जलवायु और मिट्टी में पनपती है, जो इसके अद्वितीय गुणों में योगदान देती है।

रातापानी वन

मध्य प्रदेश सरकार ने रायसेन जिले में रातापानी वन को राज्य में बाघ अभयारण्य के रूप में अधिसूचित किया है।

रातापानी वन अभयारण्य के बारे में:

- यह भारतीय राज्य मध्य प्रदेश में स्थित है, यह एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक और जैव विविधता हॉटस्पॉट है। अपने समृद्ध वनस्पतियों और जीवों के लिए जाना जाने वाला यह वन भारत के **केंद्रीय पारिस्थितिकी तंत्र** का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और **लुप्तप्राय प्रजातियों और वन-आधारित आजीविका** के संरक्षण में योगदान देता है।

स्थान और क्षेत्र:

- मध्य प्रदेश के रायसेन और सीहोर जिलों में स्थित है।
- लगभग 823 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है।
- विंध्य पर्वत श्रृंखला के अंतर्गत आता है और मध्य भारतीय परिदृश्य का हिस्सा है।

पारिस्थितिक महत्व:

- अपने घने सागौन और मिश्रित वनों के लिए जाना जाता है।
- कई जल निकायों, नदियों और पहाड़ियों को सहारा देता है, जो इसे पारिस्थितिक रूप से विविध क्षेत्र बनाता है।
- क्षेत्रीय जलवायु को विनियमित करने और जैव विविधता को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

एक्स्ट्राक्रोमोसोमल डीएनए (ईसीडीएनए)

हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि ईसीडीएनए लगभग **40% कैंसर कोशिका रेखाओं और 90% तक मस्तिष्क ट्यूमर नमूनों में मौजूद है।**

यह ऑन्कोजीन (कैंसर पैदा करने वाले जीन) को बढ़ाकर कैंसर की प्रगति और दवा प्रतिरोध में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
ईसीडीएनए क्या है?

- **एक्स्ट्राक्रोमोसोमल डीएनए (ईसीडीएनए)** मुख्य गुणसूत्रों के बाहर पाए जाने वाले आनुवंशिक पदार्थ का एक छोटा सा टुकड़ा है।
- कभी महत्वहीन समझे जाने वाले ईसीडीएनए को अब कैंसर जीवविज्ञान को समझने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

सुरक्षित ओवरनाइट रुपया दर (एसओआरआर)

सुरक्षित ओवरनाइट रुपया दर (एसओआरआर) क्या है ?

- भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा ब्याज दर डेरिवेटिव बाजार के लिए प्रस्तावित एक नई बेंचमार्क दर है। यह सुरक्षित मुद्रा बाजार में लेनदेन पर आधारित है, जिसमें शामिल हैं:
- **ओवरनाइट रेपो मार्केट:** ऐसे लेनदेन जहां वित्तीय संस्थान एक दिन के लिए संपार्श्विक के रूप में प्रतिभूतियों के खिलाफ धन उधार लेते हैं।
- **टीआरईपीएस (त्रिपक्षीय रेपो):** सरकारी प्रतिभूतियों या अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियों में सुरक्षित लेनदेन की सुविधा के लिए तीन पक्षों-उधारकर्ता, ऋणदाता और एक त्रिपक्षीय एजेंट-को शामिल करने वाला एक रेपो तंत्र।

एसओआरआर की मुख्य विशेषताएं:

- सुरक्षित लेनदेन आधार: असुरक्षित बेंचमार्क के विपरीत, एसओआरआर संपार्श्विक मुद्रा बाजार लेनदेन से प्राप्त दरों को दर्शाता है, जिससे विश्वसनीयता बढ़ती है और हेरफेर का जोखिम कम होता है।

ब्याज दर डेरिवेटिव बाजार का विकास: एसओआरआर को बेंचमार्क के रूप में उपयोग करके, आरबीआई का लक्ष्य डेरिवेटिव बाजारों में अधिक पारदर्शी और कुशल मूल्य निर्धारण का समर्थन करना है।

बेंचमार्क की विश्वसनीयता: एसओआरआर की शुरूआत बेंचमार्क गवर्नेंस को मजबूत करने और असुरक्षित दर बेंचमार्क पर निर्भरता को कम करने के आरबीआई के प्रयासों का हिस्सा है।

ओवरनाइट अल्टरनेटिव रेफरेंस रेट (ARR)

ओवरनाइट अल्टरनेटिव रेफरेंस रेट (ARR) क्या है ?

ओवरनाइट अल्टरनेटिव रेफरेंस रेट (ARR) एक आधुनिक बेंचमार्क ब्याज दर है जिसका उपयोग वित्तीय बाजारों में ओवरनाइट लेनदेन में उधार लेने या उधार देने की लागत निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह **LIBOR (लंदन इंटरबैंक ऑफ़र रेट)** जैसे पुराने बेंचमार्क की जगह लेता है और वित्तीय बेंचमार्क में पारदर्शिता और विश्वसनीयता में सुधार लाने के उद्देश्य से वैश्विक सुधारों का हिस्सा है।

ओवरनाइट ARR की मुख्य विशेषताएँ:

लेन-देन-आधारित:

- ARR की गणना वास्तविक बाजार लेनदेन के आधार पर की जाती है, जो इसे LIBOR जैसे पुराने बेंचमार्क की तुलना में अधिक विश्वसनीय बनाता है, जो अनुमानों पर निर्भर करता है।
- **ओवरनाइट आधार:**
- यह सुरक्षित या असुरक्षित मुद्रा बाजारों में एक दिन के लिए धन उधार लेने या उधार देने की लागत को दर्शाता है।

ARR के उदाहरण:

- **SOFR (सिक्वोर्ड ओवरनाइट फ़ाइनेंसिंग रेट):** यू.एस. ट्रेजरी मार्केट में सुरक्षित रेपो लेनदेन के आधार पर USD बाजारों में उपयोग किया जाता है।
- **SONIA (स्टर्लिंग ओवरनाइट इंडेक्स एवरेज):** असुरक्षित ओवरनाइट लेंडिंग के आधार पर GBP बाजारों में उपयोग किया जाता है।
- **ईएसटीआर (यूरो शॉर्ट-टर्म रेट):** असुरक्षित थोक यूरो उधार के आधार पर यूरो बाजारों में उपयोग किया जाता है। **टोनर (टोक्यो ओवरनाइट औसत दर):** असुरक्षित ओवरनाइट कॉल मनी मार्केट लेनदेन के आधार पर जेपीवाई बाजारों में उपयोग किया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय सूखा प्रतिरोध गठबंधन (IDRA)

अंतर्राष्ट्रीय सूखा प्रतिरोध गठबंधन (IDRA) के बारे में:

- यह नवंबर 2022 में 27वें संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP27) के दौरान दुनिया भर में सूखे की बढ़ती चुनौतियों का समाधान करने के लिए शुरू किया गया एक वैश्विक गठबंधन है।
- इसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन और **अस्थिर भूमि और जल प्रबंधन के कारण** सूखे की बढ़ती आवृत्ति और तीव्रता के खिलाफ कार्रवाई में तेजी लाना और लचीलापन बनाना है।

स्थापना और नेतृत्व:

- IDRA की स्थापना के दौरान **स्पेन और सेनेगल** ने इसकी सह-अध्यक्षता की थी।
- यह मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCCD) के लक्ष्यों के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है।
